



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 116]

नई दिल्ली, शुक्रवार, मार्च 16, 2012/फाल्गुन 26, 1933

No. 116]

NEW DELHI, FRIDAY, MARCH 16, 2012/PHALGUNA 26, 1933

महानिदेशक (रक्षोपाय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 मार्च, 2012

विषय : कार्बन ब्लैक के आयात से संबंधित रक्षोपाय जाँच—प्रारम्भिक निष्कर्ष के संबंध में।

सा.का.नि. 155(अ).—सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और उसके अंतर्गत बने सीमा-शुल्क टैरिफ (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियम 2002 के संबंध में।

(क) प्रक्रिया

- मैसर्स एसोसिएशन ऑफ कार्बन ब्लैक मैन्यूफैक्चरर्स, 5ए राबाकैलाश, 55/4, बालीगुंजी सरकुलर रोड, कोलकाता-700019 ने इसकी दो सदस्य कंपनियों अर्थात् मैसर्स फिलिप्स कार्बन ब्लैक लिमिटेड, 31, नेताजी सुभाष रोड, कोलकाता-700001 और मैसर्स हाइटैक कार्बन मर्धबा इन्डस्ट्रियल एरिया, डाकघर रेनुकूट, जिला सोनभद्र (उत्तर प्रदेश) की ओर से भारत में कार्बन ब्लैक के आयात पर रक्षोपाय शुल्क लगाने के लिए सीमा-शुल्क टैरिफ (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियम, 2002 के नियम 5 के अंतर्गत एक आवेदन प्रस्तुत किया है, जिससे कि चीन जनवादी गणराज्य से भारत को कार्बन ब्लैक के संबंधित आयात से होने वाले बाजार विघटन और बाजार विघटन की चुनौतियों से कार्बन ब्लैक के स्वदेशी उत्पादकों की रक्षा की जा सके।
- इस बात से संतुष्ट होते हुए कि नियम 5 की अपेक्षाओं को पूरा कर लिया गया था। चीन जन.गण. से कार्बन ब्लैक के आयात के खिलाफ रक्षोपाय जाँच प्रवर्तन नोटिस, दिनांक 2 दिसम्बर, 2011 के तहत शुरू की गई थी और उसी दिन भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था।
- दिनांक 2 दिसम्बर, 2011 के प्रवर्तन नोटिस की एक प्रति तथा घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन-पत्र के अगोपनीय रूपांतर की एक प्रति रक्षोपाय नियम, 2002 के नियम 6(2) और 6(3) के अनुसार केन्द्र सरकार में वाणिज्य मंत्रालय तथा अन्य संबंधित मंत्रालयों, चीन जन.गण. की सरकार को नई दिल्ली स्थित इसके राजदूतावास के जरिए तथा अधोलिखित अन्य हितबद्ध पक्षकारों को अग्रेषित कर दी गई थी।

(I) घरेलू उत्पादक

क. मैसर्स कार्बन ब्लैक लिमिटेड, 31, नेताजी सुभाष रोड, कोलकाता-700001

ख. मैसर्स हाईटैक कार्बन मुर्धबा इन्डस्ट्रियल एरिया, डाकघर रेनकूट, जिला सोनभद्र(उत्तर प्रदेश)।

ग. कान्टीनेन्टल कार्बन इण्डिया लिमिटेड, ए14 इन्डस्ट्रियल एरिया नं0 1 जी टी रोड के दक्षिण ओर गाजियाबाद – 201001

घ. राल्सन कार्बन ब्लैक लिमिटेड, जिटवाल कलां, तहसील मालेरकोटला, जिला, संगरुर, पंजाब।

ड. कैबाट इण्डिया लिमिटेड एमआईडीसी, प्लाट नं0 3, ट्रांस थाणे क्रीक एरिया थाणे बेलापुर रोड, डाकघर घन्सोली, थाणे-400701, महाराष्ट्र।

च. हिमाद्रि कैमिकल्स एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, पंजीकृत कार्यालय, फार्चुना टावर 23-ए, नेताजी सुभाष रोड 8वां तल कोलकाता-700001

(II) आयातक

क. मैसर्स जेंके टायर, लिंक हाउस, 3, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002

ख. मैसर्स बिरला टायर, शिवम चैम्बर्स 53, सैय्यद अमीर अली एवेन्यू, कोलकाता-700019, पश्चिम बंगाल।

ग. मैसर्स अपोलो टायर्स, अपोलो हाउस, 7, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-32, गुडगाँव -122001 (हरियाणा)।

घ. मैसर्स सिल्ट लिमिटेड, सीएट महल, 463, डाओ एनी ब्लैसेन्ट रोड वर्ली, मुंबई-400030.

ड. मैसर्स एमआरएफ लिमिटेड, 124, ग्रीन्स रोड, चेन्नई-06

च. मैसर्स राल्सन, प्लाट सं0 3, न्यू इण्डस्ट्रियल एरिया, मण्डीदीप, जिला रायसेन, म0प्र0-462046

छ. मैसर्स पोद्दार टायर, जी.टी.रोड जुगियाना, लुधियाना (पंजाब)-141420.

ज. मैसर्स ओरेंटल रबड़ इण्डस्ट्रीज, 525 कोरेगाँव, बीमा पुणे नगर रोड, पुणे

झ. मैसर्स हिन्दुस्तान रबड़, 1 जानकी सेंटर ऑफ वीरा देसाई रोड अंधेरी(प0) मुंबई-53.

झ.i. मै0 अग्रवाल रबड. 15-1-503/49/ए, अशोक मार्केट, सिदायमबर बाजार, हैदराबाद500001, आंध्र प्रदेश।

- ट. मैसर्स एक्सेल रबड़, फ्लैट सं० 507, साई सदन अपार्टमेंट्स, एसबीआई बल्कमपेट के सामने, एस.आर नगर, हैदराबाद-500038.
- ठ. मैसर्स तेगा इंडस्ट्रीज, प्रथम तल, सं० 210, 5वां मेन रोड, विजय नगर द्वितीय स्टेज, बंगलौर-560040.
- ड. मैसर्स फीनिक्स यूल, आइडियल प्लाजा, चौथा तल, 11/1, सरत बोस रोड, कोलकाता-60002, पश्चिम बंगाल।
- ढ. मैसर्स मोनोटोना टायर्स मुम्बई, मुम्बई-422001, महाराष्ट्र।
- ण. मैसर्स टीवीएस श्रीचक्रा, पेरुमलपट्टी रोड, बेलारीपट्टी रोड, मेलूर तालुक मदुरई-625122.
- त. मैसर्स आहूजा कॉन्टीनेन्टल, 1109, मित्तल टॉवर्स, एमजी रोड, बंगलौर।
- थ. मैसर्स मिडास रबड़ पी.जान जकारिया बिल्डिंग्स, कोट्टायम, केरल-686001.
- द. मैसर्स टालिन, एमसी रोड, कालाडी-683574, केरल।
- ध. मैसर्स टीएम टायर्स, 5-35, सर्व सं. 305 एवं 321 कलकल गाँव मेडक - 502320-आंध्र प्रदेश।
- न. मैसर्स हाटेक्स रबड़, 6-3-865, मधुपाल टॉवर्स, अमीरपेट, हैदराबाद-500016.

(III) नियार्तक

- क. हीबेर्ड डागुनगमिंग इण्डस्ट्री ग्रुप कम्पनी लिमिटेड, वेस्टर्न साइड, डान्धुआन साउथ रोड, शाही सिटी, हीबेर्ड प्रान्त, पी.आर चीन।
- ख. शंघाई कारगोस इण्टरनेशनल ट्रेड कम्पनी लिमिटेड, टीकू-12एफ, नं० 2601 जीटु रोड, शंघाई पीआर.चीन।
- ग. हीबीजिंग कण्टी जिनयुआन रबड़ कैमिकल कं० शेंग ली रोड, गुआगशा ज़िला 31-1-101, हेंगशुई सिटी, हीबेर्ड प्राविन्स पी.आर.चीन।
- घ. हीबेर्ड योन्घुई कैमिकल इण्डस्ट्रीज इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कम्पनी लिमिटेड सं० 199, जिन्हुआ रोड शीजुआंगहुआंग हीबेर्ड, पी.आर.चीन।
- ड. ग्रान्सु जिन्शी कैमिकल कम्पनी लिमिटेड सुपर्ब, मिन्ले काउण्टी, ग्रान्सु पी.आर.चीन।
- च. शान्डोंग शुआंगयांग कैमिकल कम्पनी लिमिटेड सं० 787 डोंगर रोड, डोंगीइंग सिटी, शान्डोंग, पी.आर.चीन।
- छ. वीफेंग लौंगझाऊ इण्डस्ट्रीज एण्ड कॉर्स कम्पनी लिमिटेड लुआचेन्ग टाउन, शाऊगुआंग सिटी, शान्डोब प्राविन्स, पी.आर.चीन।
- ज. लाइवू ताइशान कार्बन ब्लैक कम्पनी लिमिटेड गोवोझुआंग इण्डस्ट्रियल जोन, लाइचैंग, लाइवू, पी.आर.चीन।

झ. क्यूचांग कैमिकल कम्पनी लिमिटेड बीचेन्वांग, टैन्जीयिन काउंटी, एनियांग सिटी, हीनान प्राविन्स पीआर चीन।

ठ. जियान्वकसी ब्लैक कैट कार्बन ब्लैक कम्पनी, लिमिO लियाओ, जिंगडेझेन सिटी, जियान्वकसी प्राविन्स, 333000, पी.आर.चीन सुझाऊ बोआहुआ कार्बन क्युशुगुआन सुझोऊ.पीआर, चीन-21515.

4. चीन जन.गण के जात निर्यातकों, भारत में जात आयातकों/प्रयोक्ताओं और चीन जन.गण की सरकार सहित उपलब्ध जानकारी के अनुसार अन्य हितबद्ध पक्षकारों को इस अनुरोध के साथ प्रश्नावलियां भेज दी गई थीं कि वे प्रवर्तन नोटिस प्राप्त होने की तारीख से 30 दिनों के अन्दर अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करें।

5. हितबद्ध पक्षकार के रूप में उन पर विचार करने का अनुरोध मैसर्स ऑटोमोटिव टायर मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन(एटीएमए) से प्राप्त हुआ था और अनुरोध को स्वीकार कर लिया गया।

6. निम्नलिखित पक्षकारों ने अपने उत्तर प्रस्तुत करने के लिए समय बढ़ाए जाने का अनुरोध किया:

- क. निर्यातकर्ता राष्ट्र चीन जन.गण
- ख. आटोमोटिव टायर मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन(एटीएम)
- ग. जियान्वकसी ब्लैक कैट कार्बन इन्क. लिमि. चीन।

7. जाँच को निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत पूरा करने पर विचार करते हुए रक्षोपाय नियमावली 2002 के नियम 6(4) के अनुसार उत्तर प्रस्तुत करने के लिए समय बढ़ाने के अनुरोध की अनुमति दे दी गई।

8. आवेदक द्वारा प्रस्तुत जानकारी का घरेलू उत्पादकों को प्लान्ट्स का स्थल दौरा करके सत्यापन किया गया। सत्यापन रिपोर्ट के अगोपनीय पाठ को पब्लिक फाइल में रख दिया गया।

9. समुचित निर्धारण करते समय हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए सभी विचारों को ध्यान में रखा गया। प्राप्त अथवा अवाप्त अगोपनीय जानकारी को पब्लिक फाइल में रखा गया।

(ख). स्वदेशी उत्पादकों (आवेदकों) के विचार

10. विचाराधीन उत्पाद रबड़ अनुप्रयोगों में प्रयोग किया जाने वाला 'कार्बन ब्लैक' है। यह एक अकार्बनिक रसायन, जिसका प्रयोग रबड़ (टायरों सहित) के उत्पादन/प्रसंस्करण में, संबलनपूरक के रूप में किया जाता है। कार्बन ब्लैक को एसीटाइलीन ब्लैक, चैनल ब्लैक, फरनेस ब्लैक, लैम्प ब्लैक, लैम्पब्लैक, थर्मल ब्लैक और न्वायर डी कार्बन के रूप में भी जाना जाता है। रबड़ अनुप्रयोगों के लिए कार्बन ब्लैक वह कार्बन ब्लैक है जिसका प्रयोग रबड़(टायरों सहित) के उत्पादन/प्रसंस्करण में संबलन पूरक के रूप में किया जाता है। याचिका, रबड़ अनुप्रयोगों में प्रयोग किए जाने वाले कार्बन के बढ़े हुए आयातों के बारे में हैं। गैर-रबड़ अनुप्रयोगों जैसे कापियर्स तथा कम्प्यूटर प्रिन्टर कार्ट्रिजों में इंक पेण्ट्स, क्रेयान्स और पालिशेस में प्रयोग किए जाने वाले कार्बन ब्लैक मौजूदा जाँच के दायरे के अन्तर्गत नहीं आता है। सम्बद्ध वस्तुएं सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 के अन्तर्गत उपशीर्षक संख्या 28030010 में आती हैं।

11. इस माल के चार अन्य उत्पादक भी हैं परन्तु आवेदक कम्पनियाँ मैसर्स फिलिप्स कार्बन ब्लैक लिमिटेड और मैसर्स हाईटेक कार्बन 80% से अधिक का उत्पादन करती हैं और अतः प्रमुख उत्पादक हैं:

क्र.सं.	वर्ष	याचिकाकर्ता	अन्य भारतीय उत्पादक	अखिल भारतीय उत्पादक
		%	%	%
1	2008-09	81	19	100
2	2009-10	80	20	100
3	2010-11	84	16	100
4	11-12 (Q1)	85	15	100
5	11-12 (Q2)	83	17	100
6	11-12 (Q3)	82	18	100

12. विचाराधीन उत्पाद का आयात समस्त क्षति अवधि में निरापद रूप से बढ़ा है परन्तु इसके आयातों में अभी हाल ही अवधि में तीव्र वृद्धि हुई है। हाल ही अवधि में आयातों में अचानक, तीव्र एवं अत्यधिक वृद्धि हुई है। सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान भारत में उत्पादन के संबंध में भी आयातों में वृद्धि हुई परन्तु अभी हाल की अवधि में इसमें अत्यधिक वृद्धि हुई। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयातों

में अभी हाल ही में आकस्मिक, महत्वपूर्ण और तीव्र वृद्धि हुई है। इस संबंध में नियमों के अन्तर्गत निर्धारित स्पष्टतया पूरी होती है।

13. विचाराधीन उत्पाद का पाठन इतिहास रहा है जिससे विचाराधीन उत्पाद के भारतीय उयोग को क्षति होती है।
14. आवेदक ने 4 वर्षों की अवधि के आयात और क्षति से संबंधित आंकड़े भी प्रस्तुत किए हैं। याचिकाकर्त्ता ने वर्ष 2011-12 की प्रत्येक तिमाही की अलग-अलग जानकारी प्रदान की है।
15. अप्रत्याशित विकास, जिसकी वजह से आयातों में बढ़ोत्तरी हुई, यह है कि सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान सीबीएफएस की कीमतें बढ़ती रही हैं जिससे पूरे विश्व में कार्बन ब्लैक की कीमतों में वृद्धि हुई। तथापि सस्ते सीबीओ की उपलब्धता के कारण चीन के उत्पादकों ने इसकी कीमतें नहीं बढ़ाई जिसके परिणामस्वरूप चीन का कार्बन ब्लैक स्वदेशी उयोग तथा अन्य तृतीय देशों के आपूर्तिकर्ताओं की त्रुलना में मस्ता बना रहा।
16. चीन के उत्पादकों ने महत्वपूर्ण उत्पादन क्षमता का सृजन किया है और इसलिए वे बाजार अवसरों का पता लगाते हैं। सम्बद्ध वस्तु की सम्बद्ध देश में विशाला उत्पादन क्षमताओं और अपनी नियातोन्मुखता तथा भारत में सम्बद्ध वस्तु की बढ़ती हुई मांग पर विचार करते हुए, यह पूरी संभावना रही है कि आयात उच्च बने रहेंगे, जिससे घरेलू उयोग की बाजार विघटित हो जाएगी।
17. संबंधित उत्पाद की मांग संपूर्ण क्षति अवधि में बढ़ती रही।
18. सम्बंधित आयातों से आयातों का बाजार हिस्सा गढ़ा तथा घरेलू उयोग के बाजार हिस्से में कमी आई। घरेलू उयोग के बाजार हिस्से में गिरावट का घरेलू उयोग के उत्पादन और क्षमता उपयोगीकरण पर विपरीत प्रभाव पड़ा।
19. सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान घरेलू उयोग का वर्षवार बढ़ा। तथापि, तिमाही विश्लेषण दर्शाता है कि अप्रैल-जून, 2011 तक उत्पादन में वृद्धि हुई परन्तु तत्पश्चात अगली दो तिमाहियों में इसमें महत्वपूर्ण गिरावट आई। मास-वार विश्लेषण दर्शाता है कि घरेलू उयोग के उत्पादन में कमी आई। इसके अतिरिक्त घरेलू उयोग ने तर्क दिया कि नवम्बर-दिसम्बर, 2011 में इसके उत्पादन में और अधिक गिरावट आने की संभावना है।

20. यह नोट करना भी महत्वपूर्ण है कि, वार्षिक रुझान के रूप में, घरेलू उद्योग ने इस उत्पाद की उपभोक्ताओं द्वारा की गई मांग को पूरा करने की क्षमता में महत्वपूर्ण वृद्धि की है। तथापि, जबकि घरेलू उद्योग ने उपभोक्ताओं की सेवा करने के लिए अपनी क्षमताओं में वृद्धि की, परन्तु उपभोक्ता ने इस उत्पाद का चीन से भारी आयात करने का सहारा लिया।
21. घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वर्ष 2011-12 में कमी आई। तिमाही विश्लेषण दर्शाते हैं कि अभी हाल ही की अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा में भारी गिरावट आई है। बिक्री में माहवार रूप से भी भारी गिरावट आई है। मांग और उत्पादन में बढ़ोत्तरी होने के बावजूद बिक्री मात्रा में वार्षिक आधार पर उत्पादन और मांग में वृद्धि हुई परन्तु घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई।
22. आयातित माल को जहाज से उतारने के समय की कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम होती है। आयातों को जहाज से उतारने के समय की कीमत बिक्रियों की लागत से काफी कम होती है। आयात घरेलू कीमतों से बहुत कम होते हैं। कीमतें कम होने के कारण ही आयातों में वृद्धि हुई और इससे ही कीमतों का निग्रहण हो रहा है। याचिकाकर्ता ने उल्लेख किया है कि इनपुट कीमतें और उत्पादन लागत बहुत अधिक बढ़ गई हैं। परन्तु घरेलू उद्योग, भारतीय बाजार में सम्बंधित देश से सस्ते आयातों की उपलब्धता के कारण, लागत में बढ़ोत्तरी के अनुपात से बिक्री कीमत में बढ़ोत्तरी करने में अक्षम है।
23. विचाराधीन उत्पाद की घरेलू बाजार में बिक्री करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन के लिए उपयोग की गई क्षमता कम हो गई है। घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोगीकरण विगत वर्षों की तुलना में कम हुआ है। घरेलू उद्योग ने अभी हाल ही के वर्षों में उत्पादन करना कम कर दिया है।
24. इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग संचित फिहरिस्तों का सामना भी करता है। सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान सम्पत्ति सूचियों का स्तर बढ़ा है जबकि अभी हाल ही की अवधि में इसमें अत्यधिक वृद्धि हुई है।
25. अभी हाल की अवधि में घरेलू उद्योग की लाभदायकता में तीव्र गिरावट आई है। विचाराधीन उत्पाद की बिक्री लागत सम्पूर्ण क्षति अवधि में बढ़ी है। परन्तु घरेलू उद्योग बिक्रियों की लागत के अनुपात में अपनी बिक्री कीमत बढ़ाने में, कच्चे माल की कीमतों

में बढ़ोत्तरी होने और सस्ते आयातों की उपलब्धता के कारण, अक्षम था। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ में सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान हास हुआ।

26. यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि वर्ष 2008-09 वह अवधि जब घरेलू उद्योग देश में उत्पादों के पाटन के कारण नुकसानठार हा था। इस प्रकार, वर्ष 2009-09 के घाटे घरेलू उद्योग पर पाटन के प्रभाव को प्रतिबिम्बित करते हैं। यह पाटन, चीन सहित कई देशों से था। पाटनरोधी नामोदिक्षित प्राधिकारी द्वारा की गई जाँच के निष्कर्षस्वरूप पाटनरोधी शुल्क लगाया गया। पाटनरोधी शुल्क लगाने के पश्चात घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ।
27. निवेशों पर आवक ने भी लाभ की प्रवृत्ति का ही अनुसरण किया। निवेशों पर आवक में संबंधित आयातों के कारण तिमाही तथा वार्षिक रूप से गिरावट आई।
28. घरेलू बाजार में पहले से ही कष्ट पहुँचा रहे बाजार विघटन के अतिरिक्त कार्बन ब्लैक के संबंधित आयात घरेलू उद्योग के बाजार विघटन की चुनौती उपस्थित कर रहे हैं।
29. घरेलू उद्योग की बाजार विघटन के लिए पाटन और न्यून कीमत पर आयातों के अतिरिक्त अन्य कोई घटक उत्तरदायी नहीं है। चीन जन.गण (तथा अन्य देशों) से उत्पाद के पाटन की वजह से घरेलू उद्योग को अत्यधिक क्षति हुई। तथापि नामोदिक्षित प्राधिकारी ने ऐसे पाटित आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की संस्तुति पहले ही कर दी है। अतः घरेलू उद्योग को हाल ही में हुई क्षति वह क्षति है जो पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।
30. विचाराधीन उत्पाद के बढ़े हुए आयात के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के निष्पादन में तीव्र अधोगति के मद्देनजर अन्तरिम उपाय अनिवार्य है।
31. याचिकाकर्ता ने अनन्तिम रक्षोपाय शुल्क लगाने का अनुरोध किया है। विचाराधीन उत्पाद के बढ़े हुए आयातों के कारण बाजार विघटन की चुनौती और घरेलू उद्योग के निष्पादन में तीव्र अधोगति के मद्देनजर अन्तरिम उपाय अत्यावश्यक है। घरेलू उद्योग पर उत्पादन कम करने के लिए दबाव डाला गया है। घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में अत्यधिक कमी आई है। आयातों की अधिकता के कारण बिक्री में कमी से अभी हाल ही की अवधि में घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोगीकरण में अत्यधिक कमी आई है। घरेलू उद्योग की फिरिस्त में महत्वपूर्ण वृद्धि हो रही है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग कार्बन ब्लैक प्रचालनों से वित्तीय क्षति का सामना कर रहा है।

32. संवेदनशील परिस्थितियों के आलोक में आवेदक ने अनुग्रह किया कि रक्षोपाय लागू करने में जरा सा भी विलम्ब घरेलू उद्योग को गम्भीर क्षति कर सकता है। प्राधिकारी से अनुरोध किया जाता है कि वह घरेलू उद्योग को अपूरणीय क्षति से रक्षा करने के लिए अनन्तिम रक्षोपाय शुल्क के रूप में तत्काल आवश्यक कार्रवाई करे।

(ग) आटोमोटिव टायर मैन्यूफैक्चरर्स(एटीएमए) के विचार

33. सितंबर और अक्टूबर, 2011 में आयातों में वृद्धि प्रवृत्ति को प्रदर्शित नहीं करता है: सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान आयात स्थिर रहे। सितम्बर और अक्टूबर, 2011 के दौरान के आयात कोई सार्थक विश्लेषण निकालने के लिए अत्यधिक हाल के आयात हैं।

34. घरेलू उद्योग द्वारा अपूरणीय क्षति का कोई भी मामला ऐसा नहीं है जिससे संवेदनशील परिस्थितियों के दावों का खण्डन होता हो।

35. सितम्बर, 2011 और अक्टूबर, 2011 में किए गए आयात विपथगमन हैं।

36. सम्बर्धित आयात के अतिरिक्त अन्य क्षतिकारक घटक -

- क. वित्त वर्ष 2010-11 में ईयू में कार्बन ब्लैक का उत्पादन रोक दिया इसलिए घरेलू उद्योग ने ईयू में अधिक बिक्री करनी शुरू करदी। रूस से होने वाले आयात कम हो गए (ईयू को विपरित)। आस्ट्रेलिया से होने वाला आयात रुक गया (संकल विनिर्माण संयंत्र बन्द हो गए)।
- ख. वित्त वर्ष 2010-11 में आटोमोबाइल इण्डस्ट्री में तीव्र गति से वृद्धि हुई, परन्तु वित्त वर्ष 2011-12 में विकास की प्रवृत्ति परिवर्तित हो गई परन्तु पहले से की गई संविदाओं को अस्वीकार नहीं किया जा सकता था इसलिए अधिकांश वे सितम्बर-अक्टूबर, 2011 में डिलीवरी ली।
- ग. वर्ष 2008-09 से कार्बन ब्लैक के भारतीय उत्पादकों की उत्पादन क्षमता घरेलू मांग से अधिक हो गयी जिससे वे निर्यात बाजार को डील करनेलगे। पीबीसीएल और हाई टेक निर्यात केन्द्रित कम्पनियां हैं।
- घ. महत्वपूर्ण निर्यात बिक्री प्राप्ति।
- ड. घरेलू उद्योग का निर्यात बाजार पर फोकस होने और वर्ष 2011-12 में मांग की प्रत्याशित वृद्धि होने के कारण, उपयोक्ता उद्योग को कार्बन ब्लैक की आपूर्ति

बनाए रखने की जरूरत थी इसलिए उन्होंने वर्ष 2011-12 की जरूरत के लिए वर्ष 2010-11 में ही ऑर्डर दे दिए।

च. टायर कम्पनियों को नगण्य लाभ हो रहा है और इस कारण, कार्बन ब्लैक की मांग में भी कमी हुई है। महानिदेशक(रक्षोपाय) से अनुरोध है कि वे नवम्बर, 2011 से मार्च, 2012 तक के आयातों का विश्लेषण यह निर्धारण करने के लिए करें कि क्या घरेलू उद्योग द्वारा तथाकथित आयात में लगातार वृद्धि हुई है।

37. बाजार विघटन नहीं

क. यूएसआईटीसी – घरेलू उद्योग की क्षमता में सतत वृद्धि भौतिक क्षति के दावे को नकार देती है।
 ख. संस्थापित क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोगीकरण में वृद्धि।
 ग. साथ ही तिमाही दर तिमाही उत्पादन बढ़ा है।
 घ. मूल्य और भावा दोनों रूपों में बिक्री में वृद्धि हुई। अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री में बढ़ोत्तरी के कारण अभी हाल ही की अवधि में बिक्री में कमी आई है।
 ङ. मूल्य की मंदी अथवा दमनकुछ भी नहीं हुआ। सीआईएफ कीमतों में बढ़ोत्तरी हुई और घरेलू बिक्री कीमतें भी बढ़ी।
 च. टायर कम्पनियों द्वारा भारत में अधिप्राप्त कार्बन ब्लैक की कीमतें घरेलू उद्योग द्वारा अपनी याचिका में दर्शाई गई कीमतों से काफी अधिक हैं।
 छ. याचिकाकर्त्ता कम्पनियों की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार उनके मुनाफे में वृद्धि हुई है। पीवीआईटी के मूल्यहास और हित लागत में अत्यधिक बढ़ोत्तरी हुई।
 ज. याचिकाकर्त्ता ने डीजीएडी के समक्ष स्वयं इस तथ्य का उल्लेख किया कि अप्रैल-अक्टूबर, 2011 के दौरान आयातों में वृद्धि का मुख्य कारण अपर्याप्त एडी इयूटी थी। वर्तमान जाँच से दोहरा संरक्षण मिल सकता है।
 झ. मांग वी प्रवृत्ति में परिवर्तन के मद्देनजर अकारण विश्लेषण।

38. चूंकि लगातार आयात की कोई संभावना नहीं है, इसलिए बाजार विघटनका कोई डर नहीं है और इसलिए भौतिक क्षति होने की भी कोई चुनौती नहीं है।

39. रक्षोपाय शुल्क लगाया जाना जनहित में नहीं होगा क्योंकि कार्बन ब्लैक का सबसे बड़ा उपयोक्ता अर्थात् टायर उद्योग विभिन्न इनपुटों पर पहले से ही पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क का सामना कर रहा है।

40. आयात आंकड़ों में कार्बन ब्लैक के नान-रबड़ उपयोग के आंकड़े भी शामिल हैं।

41. प्रवर्तन अधिसूचना और घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका में कार्बन ब्लैक की कुल मांग के संबंध में प्रदान कराए गए आंकड़ों में भिन्नता है।

(घ) मैसर्स जियांगिक्सन ब्लैक कैट कार्बन इंक. लिमिटेड के विचार

42. आयात आंकड़े अत्यधिक त्रुटिपूर्ण हैं और आयातों में अचानक वृद्धि को स्थापित नहीं करते हैं।

- क. याचिकाकर्ता द्वारा आयात के अपुष्ट आंकड़ों, यदि कोई के आशोधन/संशोधनका प्रकटीकरण नहीं किया गया। प्रतिवादी, प्राधिकारी से अपुष्ट आयात सांख्यिकी, कार्यविधि प्रदान करने का अनुरोध करता है।
- ख. आयात आंकड़े, जिन पर भरोसा किया गया है, में संबंधित वस्तुओं के अलावा अन्य उत्पादों (कार्बन ब्लैक के गैर-रबड़ उपयोग को शामिल किया गया है जिससे आयात विवरण स्वभावतः वृद्धि दर्शाएगा) को भी शामिल किया गया है।
- ग. डीजीएसजीडी के समक्ष प्रस्तुत किए गए आंकड़े एडी प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किए गए आंकड़ों से बिल्कुल भिन्न हैं (डीजीएसजीडी के समक्ष अत्यधिक उच्च आयात दर्शाए गए हैं)
- घ. आंकड़ा संकलन भी त्रुटिपूर्ण है (दशमलव विन्दुओं को गलत जगह पर लगाया गया और अतिरिक्त जीरो लगाए गए, मदों को दोहराया गया)।

43. याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत क्षति सूचना और अनुबंध में विसंगतियाँ हैं।

44. इस मामले में रक्षोपाय शुल्क और एडी शुल्क एक साथ नहीं लगाए जा सकते हैं।

45. 'बाजार विघटन' का दाया निम्नलिखित कारणों से त्रुटिपूर्ण है:

- क. याचिकाकर्ताओं के उत्पादन में वर्ष 2011-12 में, तिमाही वार भी, कोई कमी नहीं आई (म्यू3 के आंकड़ों का विश्लेषण नहीं क्योंकि केवल एक माह उपलब्ध है)।
- ख. क्षति, यदि कोई, हुई तो याचिकाकर्ता द्वारा किए गए आयातों के कारण ही हुई(हाईटेक कार्बन से सम्बद्ध एक कम्पनी अर्थात् शिरला कार्बनपर्याप्त मात्रा में भारत को निर्यात करती रही है, इसलिए हाईटेक कार्बन के उत्पादन में गिरावट, यदि कोई, भारत में उत्पादन करने के बजाय आयात पर जोर देने से आई)।

ग. बिक्री मात्रा और क्षमता उपयोग में गिरावट घरेलू उद्योग के 'बाजार विघटन' का संकेत नहीं करता है(घरेलू उद्योग की बिक्री और क्षमता उपयोग में गिरावट इतनी कम है कि उससे 'बाजार विघटन' होने पर विचार करना निरर्थक है, साथ ही साथ ही ऐसा सम्बन्धित आयातों द्वारा नहीं हुआ है।

46. पाटनरोधी शुल्क द्वारा आच्छादित क्षति, यदि कोई: क्षति मार्जिन के आधार पर एडी शुल्क लगाया गया है। तब से यदि लागत में वृद्धि को भी ध्यान में रखा जाए तो एनआईपी में 12% की बढ़ोतरी हुई, इसलिए, चूंकि उत्तराई कीमत भी बढ़ी है(18%), क्षति मार्जिन एडी शुल्क द्वारा कवर हो जाता है।

47. कोई आकस्मिक लिंक नहीं

क. विगत समय में भी लाभ में कमी – वित्त वर्ष 2011-12 के दौरान ही आयातों में वृद्धि हुई परन्तु इससे पहले भी लाभदायकता में तीव्र गिर से कमी हुई थी।
 ख. तिमाही-दर-तिमाही विश्लेषण भी घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं दर्शाता है – जब आयात बढ़ रहे थे तो घरेलू उद्योग कील बिक्री कीमत भी बढ़ी थी।

48. प्रतिस्पर्धा अधिनियम, 2002 के उल्लंघन में जाँच

क. दो उत्पादक (हाई टेक कार्बन और फिलिप्स कार्बन ब्लैक लिमिटेड) जिन्होंने यह याचिका दायर की है, की इण्डियन कार्बन ब्लैक बाजार में अधिपत्य वाली स्थिति है और चीन से प्रतिस्पर्धा दूर करने के लिए इस अच्छी स्थिति का दुरुपयोग कर रहे हैं।
 ख. एस.21 प्रतिस्पर्धा अधिनियम: जहाँ पक्षकार सांविधिक प्राधिकारी के समक्ष प्रतिस्पर्धा अधिनियम की अनुप्रयोज्यता के संबंध में मुद्दे उठाते हैं, तो उत्तरवर्ती को जाँच की कार्रवाई करने से मामला प्रतिस्पर्धा आयोग को भेजना होता है।

49. घरेलू उद्योग के प्रश्नावली पर घरेलू उद्योग द्वारा की गई अनुक्रिया प्रतिवादी को उपलब्ध नहीं करायी गयी है। इसलिए यह याचिका अपूर्ण है और इस पर कोई जाँच नहीं की जा सकती।

50. कई देशों के आयातों में वृद्धि हुई है। अतः प्रोटोकॉल के अन्तर्गत रक्षोपाय शुल्क नहीं लगायाजा सकता है।

३. चीन सरकार के विचार

51. वित्त वर्ष 2010-11 में ईयू में कार्बन ब्लैक सुविधा काउंट्पादन बंद कर दिया इसलिए घरेलू उद्योग ने ईयू में अधिक बिक्री शुरू कर दी। रूस से आयातों में ह्रास हुआ (ईयू को विपरित)। आस्ट्रेलिया से आयात रुक गए (एक विनिर्माण संयंत्र बंद हो गया)।

52. चीन से भारत को किए गए कार्बन ब्लैक के आयात का कोई विपरीत प्रभाव नहीं है।

53. चीन में कार्बन ब्लैक की मुख्य खपत घरेलू बाजार में होती है। चीन में कुल उत्पादन का केवल 7% का निर्यात होता है, अन्य प्रमुख बाजारों, चीन की सीमित क्षमताओं ध्यान में रखते हुए भविष्य में चीन से भारत को सीमित आपूर्ति से बाजार विकृति नहीं होगी।

54. वर्ष 2008-09 की तुलना में घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं।

55. भारत में मांग-आपूर्ति का अन्तराल, घरेलू उद्योग का बढ़ता निर्यात, न्यूनतर जीडीपीवृद्धि उच्च ब्याज लागत और मुद्रा मूल्यह्रास के कारण के आकस्मिक लिंक नहीं।

च. चीन चैम्बर ऑफ कॉर्मर्स ऑफ मेटल्स, मिनरल्स एण्ड कैमिकल इम्पोर्ट्स एण्ड एक्सपोर्ट्स एण्ड चाइना रबड इण्डस्ट्री एसोसिएशन

56. उपर्युक्त दोनों पक्षकारों से, उन्हें मौजूदा जाँच में हितबद्ध पक्षकार के रूप में शामिल करने के लिए कोई अनुरोध प्राप्त नहीं हुआ है। हालांकि उन्होंने 15.2.2012 को अपनी प्रस्तुति दर्ज की, इस मामले में उनसे समय विस्तार करने का कोई अनुरोध प्राप्त नहीं हुआ है। तथापि उनके विचार संक्षेप में निम्नलिखित हैं:-

क. चीन जन गण से कार्बन ब्लैक का आयात, बढ़े हुए आयातों की एक स्थापित प्रवृत्ति नहीं है और यह एक असामान्य आवेग, केवल एक अवधि खासकर सितम्बर, 011 तक सीमित, का संकेतक है।

ख. सितंबर, 2011 माह में आयातों में असामान्य वृद्धि आयातों और उपयोक्ता उद्योग द्वारा अग्रिम मात्रा आपूर्ति संविदाओं के कारण हुई जिससे सितम्बर, 2012 माह में अनायास वृद्धि हुई।

ग. चीन से आयातित विचाराधीन उत्पाद की मात्रा भारतीय टायर उद्योग की अस्थायी मांग को पूरा करने के लिए किया गया निर्यात था।

घ. घरेलू उत्पादों की कीमत ऊम, दमनया उनका अवसाद नहीं किया गया।

ड. चीनी उत्पादकों द्वारा घरेलू मांग, अन्य प्रमुख निर्यात बाजारों को प्राथमिकता दिए जाने, सरकारी संरक्षण के कारण उत्पादन क्षमता सीमित होने के मद्देनजर बाजार विकृत होने की कोई चुनौती नहीं है।

च. घरेलू उद्योग कासकारात्मक रुझान। वर्ष 2008-09 की तुलना में वर्ष 2009-10 में अधिकांश आर्थिक प्राचलों ने सकारात्मक झुकाव दर्शाया है।

छ. **महानिदेशक(रक्षोपाय)** के निष्कर्ष

57. मैंने मामले के रिकॉर्ड, घरेलू उत्पादकों, निर्यातकों और निर्यातक राष्ट्र द्वारा दायर उत्तरों का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है। विभिन्न पक्षकारों द्वारा की गई प्रस्तुतियों और उनसे उत्पन्नमुद्दों का इस निष्कर्ष में उचित स्थानों पर हल निकाला गया है।

58. याचिकाकर्ताओं ने विचाराधीन उत्पाद के बढ़ते हुए आयातों के परिणामस्वरूप बाजार विकृति की चुनौती होने और घरेलू उद्योग के निष्पादन में तीव्र कमी होने को देखते हुए **अनन्तिम रक्षोपाय शुल्क लगाने** का अनुरोध किया है। घरेलू उद्योग पर उत्पादन कम करने का दबाव डाला गया। घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में गिरावट आई है। आयात बढ़ने से बिक्री में कमी होने के कारण घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग उनकी हाल ही की अवधि में तेजी से घटा है। घरेलू उद्योग की इन्वेन्टरी तेजी से बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग कार्बन ब्लैक प्रचालनों के कारण वित्तीय घाटे का सामना कर रहा है।

59. दिनांक 11.6.2002 की अधिसूचना सं0 34/2002-एनटी-सीमाशुल्क के तहत अधिसूचित सीमा शुल्क टैरिफ (सांक्रान्तिक उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियमावली, 2002 के नियम 9 में उल्लेख है कि महानिदेशक शीघ्र जाँच की कार्रवाई करेंगे और संवेदनशील परिस्थितियों में वह "बाजार विकृति" या "बाजार विकृति की चुनौती" के संबंध में प्रारम्भिक निष्कर्ष रिकॉर्ड कर सकता है/सकती है। जाँचको शासित करने वाले सिद्धान्तों का प्रावधान सीमा शुल्क टैरिफ (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियमावली, 2002 के नियम 6 में किया गया है। उक्त नियमावली के नियम 6.9 के ध्यानपूर्वक पाठन से यह निष्कर्ष निकलता है कि नियमावली में प्रारम्भिक निष्कर्ष के आधार पर अनन्तिम रक्षोपाय शुल्क की शीघ्र संस्तुति करने का प्रावधान है। नियम 15 में यह प्रावधान है कि यदि जाँच के निष्कर्ष के पश्चात आरोपित एवं संग्रहित अनन्तिम शुल्क से कम है तो शुल्क के अन्तर की वापसी की जाएगी। वर्तमान मामले के तथ्यों एवं उसकी परिस्थितियों के आलोक में यह विचार किया गया कि चीन जन गण से विचाराधीन

उत्पाद के वर्धित आयात के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की निष्पादन में तीव्र गिरावट को ध्यान में रखते हुए अन्तरिम उपाय करना आवश्यक है। चंकि इस मामले की शुरुआत करदी गई है और संवेदनशील परिस्थितियों को देखते हुए अनन्तिम निष्कर्ष जारी किए जा रहे हैं, यह अनन्तिम उपाय घरेलू विधि एवं चीन के अधिग्रहण प्रोटोकॉल के अनुच्छेद 16.7 की पूर्ण नियमावर्तन के अनुरूप हैं।

(I) जाँचाधीन उत्पाद

60. शामिल उत्पाद "कार्बन ब्लैक" है जिसे सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अंतर्गत सीमाशुल्क उपशीर्ष सं. 28030010 के तहत वर्गीकृत किया गया है। कार्बन ब्लैक को एसिटिलिन ब्लैक, चैनल ब्लैक, फर्नस ब्लैक, लैप ब्लैक, थर्मल ब्लैक तथा नॉयर डी कार्बन भी कहा जाता है। कार्बन ब्लैक को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - रबड तथा नॉन रबड एप्लिकेशन कार्बन ब्लैक। रबड अनुप्रयोगों हेतु कार्बन ब्लैक का प्रयोग रिंफोर्सिंग फिलर के रूपमें रबड (टायरों सहित) के उत्पादन/प्रसंस्करण में किया जाता है। वर्तमान याचिका रबड अनुप्रयोगों में प्रयुक्त कार्बन ब्लैक के वर्धित आयातों के बारे में हैं। गैर-रबड अनुप्रयोगों, जैसे कॉपियर की स्थाही तथा कम्प्युटर प्रिंटर कार्टज, पेंट, क्रेयोन तथा पॉलिश में प्रयुक्त कार्बन ब्लैक वर्तमान जाँच के दायरे के भीतर नहीं हैं।

(II) घरेलू उद्योग:

61. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8g(7)(क) में घरेलू उद्योग निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:

(क) "घरेलू उद्योग का आशय उन उत्पादकों से है जो -

- समान मद या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी मद का भारत में समग्र उत्पादन करते हैं।
- समान मद या प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी मद का भारत में समग्र आडटपुट का भारत में उक्त मद के कुल उत्पादन में प्रमुख हिस्सा है।

62. यह आवेदन मैसर्स एसोसिएशन ऑफ कार्बन मैन्यूफैक्चरर्स, 5ए राबा कैलाश, 55/4 बेलीगंज सर्कुलर रोड कोलकाता द्वारा इसकी दो सदस्य कम्पनियों मैसर्स फिलिप्स कार्बन कार्बन ब्लैक लिमिटेड, 31, नेताजी सुभाष रोड कोलकाता-700001 और मैसर्स हाईटेक कार्बन मुर्धवा इंड. सीमा पीओ रेण्कूट, जिला सोनभद्र (30 प्र०) की ओर से दायर किया गया है। भारत में कार्बन ब्लैक के चार अन्य उत्पादक अर्थात् कान्टीनेन्टल कार्बन एण्डिया लिमिटेड, ए-14 इण्डस्ट्रियल एरिया नं० १ साठथ साइड ऑफ जीटी रोड,

गाजियाबाद-201001, राल्सन कार्बन ब्लैक लिमिटेड जितवाला कलां, तहसील मलेरकोटला जिला संगरुर, पंजाब, कैबाट इण्डिया लिमिटेड एमआईडीसी प्लाट नं० ३, ट्रान्स थाणे क्रीक एरिया थाणे बेलापुर रोड पोस्ट घनसोली थाणे-400701 महाराष्ट्र, हिमाद्रि कैमिकल्स एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड पंजीकृत कार्यालय फार्चुना टॉवर 23-ए, नेताजी सुभाष रोड ४वां तल कोलकाता-700001. परन्तु वे वतमान मामले में याचिकाकर्ता नहीं हैं। आवेदकों का भारतीय उत्पाद में ८०% से अधिक का हिस्सा है और इसलिए वे प्रमुख उत्पादक हैं।

63. रिकॉर्ड पर उपलब्ध जानकारी को मद्देनज़र यह निश्चय किया जाता है कि घरेलू उत्पादकों, जिन्होंने यह याचिका दायर की है और जिन्होंने संगत जानकारी उपलब्ध कराई है, का उत्पादन भारत में उक्त वस्तु के कुल उत्पादन का एक प्रमुख हिस्सा है। तदుसार सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा ४ग(7)(क) के अनुरूप घरेलू उत्पादक हैं।

(III) जांच पड़ताल की अवधि (पीओआई)

64. यह एक नया मामला है जो बाजार के हाल के विघटन या घरेलू उद्योग के सामने आ रहे बाजार में विघटन होने के खतरे के आधार पर है, पीओआई को वर्ष 2008-09 से आगे क्यू3(अक्तूबर) 2011-12 तक लिया गया है और निदेशालय के अधिकारियों द्वारा स्थल का दौरा करके अक्तूबर, 2011 तक घरेलू उद्योग के उपलब्ध रिकॉर्डों से यथा संभव घरेलू आंकड़ों को सत्यापित किया गया है।

(IV) सूचना का स्रोत:

65. वर्तमान पीओआई के महत्वपूर्ण आंकड़े आईबीआईएस से लिए गए हैं जिन्हें याचिकाकर्त्ताओं द्वारा प्रस्तुत किया गया है। बढ़ते आयातों का विश्लेषण, रबड़ एप्लिकेशन के लिए कार्बन ब्लैक के संगत पीओआई के लिए किया गया है।

घरेलू उद्योग द्वारा अपनी याचिका में प्रस्तुत किए गए संगत पीओआई के क्षति से संबंधित आंकड़े भी लिए गए हैं जिन्हें विभाग द्वारा स्थल पर दौरा करके यथा आवश्यक रूप से सत्यापित किया गया है और सत्यापित आंकड़ों को क्षति विश्लेषण के लिए विचारार्थ लिया गया है। क्षति मार्जिन के लागत आंकड़े और गणना, विष्पक्ष चार्टर्ड एकाउंटेट द्वारा विधिवत प्रमाणित याचिकाकर्ता द्वारा प्रदान किए गए हैं।

नोट किया जाता है कि विरोध करने वाली किसी भी इच्छुक पार्टी, चीनी प्रोइयूसर, एटीएमए, उपभोक्ता या किसी अन्य इच्छुक पार्टी ने भारत को ब्लैक कार्बन के निबल आयात के संबंध में कोई सूचना नहीं दी है। एटीएमए ने भी इसके विभिन्न सदस्यों द्वारा कार्बन ब्लैक के आयात के संबंध में कोई सूचना नहीं दी है।

(V) प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता:

66. घरेलू उद्योग ने गोपनीय आधार पर कुछ सूचना दी है और प्रस्तुत की गई सूचना/आंकड़ों पर गोपनीयता मांगी है। घरेलू उद्योग ने दिनांक 6.9.1997 की व्यापार सूचना सं. एसजी/टीएन/1/97 और सुरक्षोपाय नियम, 2002 के उपबंधों के अनुसार सुरक्षोपाय लागू करने के लिए आवेदन के गैर-गोपनीय पाठ को दिया था। इसके अलावा, आवेदन करते समय गोपनीयता प्राप्त करने के लिए घरेलू उद्योग ने कारण प्रस्तुत किए हैं।
67. अन्य इच्छुक पार्टियों ने भी सूचनाओं की गोपनीयता के लिए अनुरोध किया है और प्रस्तुत की गई सभी सूचनाओं की गोपनीयता और गैर-गोपनीय पाठों को प्रस्तुत किया है। तथापि, उन्होंने घरेलू उद्योग द्वारा मांगी गई अत्यधिक गोपनीयता का विरोध किया है और तर्क दिया है कि आर्थिक पैरामीटरों से संबंधित वास्तविक आंकड़ों के आधार पर ही अर्थपूर्ण तर्क अघेषित किए जा सकते हैं और इस प्रकार इसे मंजूर नहीं किया जाना चाहिए।
68. सुरक्षोपाय नियम, 2002 के नियम 7 और डब्ल्यूटीओ के अनुच्छेद 3.2 में भी गोपनीयता का प्रावधान किया गया है। याचिकाकर्ता के लिए यह अपेक्षित है कि वह ऐसी सूचना को प्रकट न करे जो कंपनी की गोपनीय सूचना है, जिसको प्रकट करने से कंपनी के व्यापार हितों पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है, जो पब्लिक क्षेत्र में नहीं है और जिसे विगत में याचिकाकर्ता ने काफी हद तक जनता के सामने प्रकट नहीं किया है। तद्वारा घरेलू उद्योग द्वारा मांगी गई गोपनीयता मंजूर की जाती है।

(VI) बढ़ता आयात

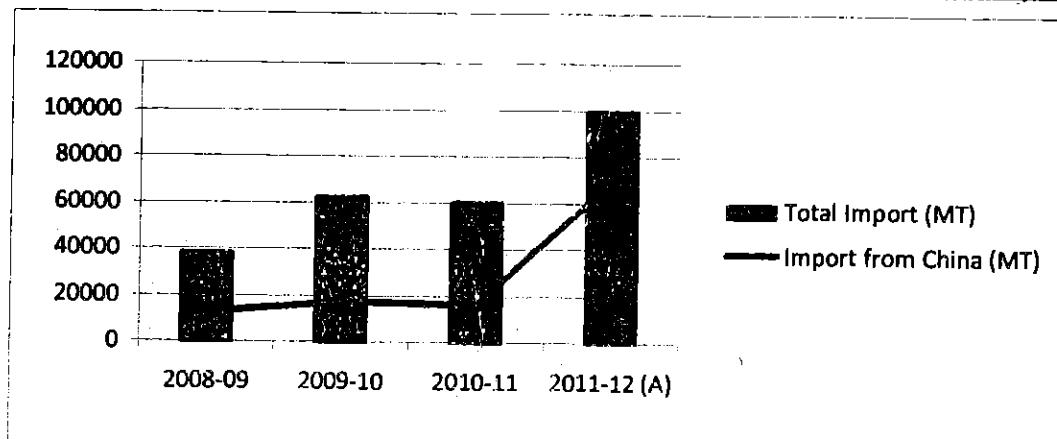
69. भारत में चीन जन गणतंत्र से कार्बन ब्लैक के आयात में निरपेक्ष तथा प्रासंगिक संदर्भ में अत्यधिक तेजी का पता चलता है। यह भी नोट किया गया है कि चीन जन गणतंत्र से आयात में वृद्धि दर, दूसरे देशों की तुलना में इस देश से किया गया कहीं अधिक है और इससे बाजार के अवरुद्ध होने और बाजार के अवरुद्ध हो जाने का खतरा बढ़ गया है। वर्ष 2008-09 से आगे के वर्षों और अक्टूबर, 2011 तक कार्बन ब्लैक के आयात से संबंधित

आंकड़े निम्नवत हैं:-

(VII) निरपेक्ष संदर्भ में चीनी से आयात में वृद्धि

70. विचाराधीन उत्पाद का आयात, निरपेक्ष संदर्भ में क्षति की पूरी अवधि के दौरान बढ़ा है। हाल ही की अवधि के दौरान आयातों में अचानक, अधिक और महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। वर्ष 2008-09 में चीन से किया गया 12971 एमटी का आयात वर्ष 2011-12 (वार्षिक आधार पर) में बढ़कर 69960 एमटी हो गया जो 539% का घोतक है। वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2011-12 में चीन से आयात में अचानक 318% की वृद्धि हुई है तथापि कुल आयातों में केवल 65% की वृद्धि हुई है।

वित्त वर्ष	तिमाही	चीन से आयात (मी.टन)	कुल आयात (मी.टन)	चीन से आयात का प्रतिशत
2008-09		12971	39187	33
2009-10		17722	63244	28
2010-11		16724	61185	27
2011-12	Q1	5789	14828	39
	Q2	25686	32465	79
	OCT,11	9335	11489	81
	Q3 (A)	28005	34467	81
2011-12 (A)		69960	100769	69



वर्ष 2009-10 की तुलना में वर्ष 2010-11 में आयातों में हल्की सी कमी संबंधित वस्तु पर 30 जुलाई, 2009(अन.) की अधिसूचना सं. 83/2009-सीमाशुल्क और 28 जनवरी, 2010 (अन्तिम) की अधिसूचना सं. 06/2010 सीमा शुल्क के तहत लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के कारण हुई।

उपर्युक्त आंकड़ों से यह देखा जा सकता है कि चीन से कार्बन ब्लैक के आयात समग्र रूप में तेजी से बढ़ रहे हैं। चीन से कार्बन ब्लैक का समग्र आयात वर्ष 2010-11 में आयातित कुल 16724 मी.टन की मात्रा की तुलना में वर्ष 2011-12 की पहली छमाही में बढ़कर लगभग दो गुने हो गए हैं।

(क) उत्पादन की तुलना में आयातों में वृद्धि

71. भारत में कार्बन ब्लैक का आयात भारतीय उत्पादन की तुलना में तेजी से बढ़ा है। चीन जन गण से बढ़े हुए आयातों के कारण अभी हाल ही की अवधि (2011-12) में सकल रूप में घरेलू उयोग के उत्पादन में गिरावट आई है। यह देखा जा सकता है कि चीन से कार्बन ब्लैक के आयात वर्ष 2008-09 और वर्ष 2010-11 के दौरान न्यूनतम स्तर पर (3-4% के बीच) रहे। तथापि, उसके बाद वर्ष 2011-12 में आयात इतनी तेजी से बढ़े कि भारतीय उत्पादन की तुलना में आयात बढ़कर 11% हो गए।

वित्त वर्ष	तिमाही	चीन से आयात (मी.टन)	उत्पादन (मी.टन)	घरेलू उत्पादन की तुलना में चीन से
------------	--------	----------------------	------------------	-----------------------------------

				आयात का %
2008-09		12971	416244	3
2009-10		17722	492863	4
2010-11		16724	585899	3
2011-12	Q1	5789	163458	4
	Q2	25686	148188	17
	OCT,11	9335	46532	20
	Q3(A)	28005	139746	
2011-12 (वार्षिकीकृत)		69960	614105	11

(ख) खपत/मांग के संबंध में आयात

72. चीन उत्पादित कार्बन ब्लैक का भारत में आयात, भारत में कार्बन ब्लैक की खपत के संबंध में बहुत तेजी से बढ़े। यह देखा जा सकता है कि वर्ष 2008-09 और वर्ष 2010-11 के दौरान चीन से कार्बन ब्लैक के आयात न्यूनतम स्तर (3%) पर रहे। तथापि, उसके बाद वर्ष 2011-12 में आयात इतनी तेजी से बढ़े कि भारत में होने वाली खपत की तुलना आयात बढ़कर 11% हो गए।

वित्त वर्ष	तिमाही	चीन से आयात (मी.टन)	कुल मांग/खपत (मी.टन)	घरेलू उत्पादन की तुलना में चीन से आयात का %
2008-09		12971	460048	3
2009-10		17722	582930	3
2010-11		16724	614152	3
2011-12	Q1	5789	160228	4
	Q2	25686	164671	16
	OCT,11	9335		
	Q3	28005	149793	19
2011-12 (वार्षिकीकृत)		69960	632923	11

73. उपर्युक्त स्थिति के मद्देनजर, यह पाया गया है कि चीन पीआर से कार्बन ब्लैक का आयता निरपेक्ष और प्रासंगिक संदर्भों में बढ़ा है और यह कि यह वृद्धि हाल में अचानक, पर्याप्त, तेजी और महत्यपूर्ण रूप से हुई है जो अधिनियम की धारा 8ग के अर्थ के अंतर्गत “बढ़ा हुआ आयात” है।

(VIII) अप्रत्याशित विकास

74. अर्जन्टीना में अपीलीय निकाय-फुटवियर (ईसी मामला) का यह मानना है कि अप्रत्याशित विकास का यह अर्थ है कि ऐसे विकास जो अपेक्षित नहीं थे। ‘अप्रत्याशित विकास’ के लिए यह आवश्यक है कि किसी ऐसे उत्पाद का ऐसा विकास हो जिसका आयात किया जा रहा हो और वह इतनी अधिक मात्रा में बढ़ जाए तथा ऐसी स्थितियों में बढ़ जाए कि घरेलू उत्पादकों के लिए ऐसी गंभीर क्षति का कारण बने जिसे वे ‘अप्रत्याशित’ मानते हैं। निकाय ने इसी मामले में जीएटीटी पैनल रिपोर्ट नोट की जिसने यह माना है कि यह विकास उपकर वार्ता के समय अप्रत्याशित रहे हैं। कोरिया-डेयरी में अपीलीय निकाय का मानना है कि अप्रत्याशित विकास, उस समय प्रत्याशित या अपेक्षित विकास नहीं होते हैं जब सदस्य ने ऐसी बाध्यता हासिल की हो।

75. अर्जन्टीना में अपीलीय निकाय – फुटवियर(ईसी) ने तब यह माना कि ‘अप्रत्याशित विकास’ की जरूरत, सुरक्षोपायों को अधिरोपित करने के लिए पृथक “शर्त” स्थापित नहीं करती है लेकिन “परिस्थितियों” की कतिपय शर्तों का वर्णन करती है।

76. यूएस-स्टील सुरक्षोपायों के पैनल का मानना है कि कई घटनाओं के मिल जाने से अप्रत्याशित विकास का आधार बन जाता है।

“यूनाइटेड स्टेट इस बात पर जोर देता है कि यूएस डॉलर का मजबूत हो जाना एक विकास था जो एशिया और पूर्व यूएसएसआर में मुद्रा के अभाव और दूसरे बाजारों द्वारा स्टील से इंकार कर दिए जाने के कारण ‘यूनाइटेड स्टेट’ में स्टील की बढ़ती मांग जैसी दूसरी गतिविधियों के साथ मिलकर आयात बढ़ाने का कारण बना।”

77. याचिकाकर्ता ने डीआई सहित दूसरे देशों द्वारा प्रयुक्त कच्चे माल की तुलना में चीन द्वारा प्रयुक्त कच्चे माल की कम कीमत की ओर संकेत किया और इसका बढ़ता अंतर

अप्रत्याशित विकास माना। यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग, कार्बन ब्लैक का विनिर्माण करने के लिए कच्चे माल के रूप में सीबीएफएस (कार्बन ब्लैक फीड स्टॉक) का उपयोग करते हैं जबकि चीनी उत्पादकर्ता सीबीओ (कार्बन ब्लैक ऑयल) का उपयोग करते हैं। इन दो कच्चे मालों की कीमत में अत्यधिक अंतर है। दो सामग्रियों के कच्चे माल की कीमतों में अंतर, चीनी उत्पादकों को लागत लाभ प्रदान करती है जिसके कारण चीनी कार्बन ब्लैक की कम कीमतें होती हैं।

78. कार्बन ब्लैक उद्योग में कच्चा माल ही कार्बन ब्लैक का उत्पादन करने में सबसे अंधिक खर्चोंला सामान है। इस प्रकार कार्बन ब्लैक की कीमत की प्रवृत्ति का निर्णय करने में कच्चे माल की कीमत मुख्य भूमिका निभाती है; कीमत प्रवृत्ति का विश्लेषण करने के बाद यह देखा जाएगा कि क्षति की पूरी अवधि में सीबीओ और सीबीएफएस के बीच कीमत में अंतर रहा है और जून, 2011 के माह से सीबीओ की कीमतें गिरनी शुरू हो गई और इसी बीच सीबीएफओ की कीमत बढ़नी शुरू हो गई जिसे नीचे दिए गए विवरण से देखा जा सकता है।

	सीबीओ एफओबी कीमत	सीबी एफएस कीमत	एडीडी सहित कार्बन ब्लैक आयात कीमत (रुपया प्रति मी.टन)						
माह	रु0/मी.टन	रु0/ मी.टन	चीन	आस्ट्रेलिया	कोरिया (एडीडी नहीं)	थाईलैंड	रूस	बिन्द्री मूल्य घरेलू उद्योग (इन्डेक्सड)	
11-अप्रैल	26,044	29,457	56,012	67,492	60,766	61,781	56,683		100
11-मई	25,814	27,878	59,410	65,813	60,596	60,611	59,540		102
11-जून	24,621	29,136	60,144	66,448	79,838	65,184	57,238		101
11-जुला	22,993	29,342	61,890	74,700	74,197	64,787	58,117		104
11-अग.	23,264	27,198	60,676	77,415	72,906	65,390	----		107
11-सिं.	23,459	28,313	62,010	80,508	73,244	81,266	60,507		107
11-अ.	24,278	30,547	65,646	85,015	78,138	84,048	67,362		108

79. हाल में घरेलू उद्योग ने अपनी कीमतें बढ़ा दी है लेकिन इसी बीच चीन ने भी अपनी कीमतें बढ़ा दीं। लेकिन ऐसी वृद्धि के बावजूद, चीन और तीसरे विश्व के देशों द्वारा उद्धृत कीमत, घरेलू उद्योग की कीमतों से कहीं कम हैं। कार्बन ब्लैक के उन अन्य प्रमुख आपूर्तिकर्ता देशों की कीमत, जो कच्चे माल के रूप में सीबीएफएस का इस्तेमाल करते हैं अर्थात् रूस, कोरिया, आस्ट्रेलिया और थाइलैंड, उन्होंने भी उसी अवधि के दौरान अर्थात् जून, 2011 से आगे कीमत बढ़ानी शुरू कर दी और उन कीमतों की तुलना घरेलू उद्योग द्वारा रखी गई कीमतों के साथ की जा सकती है। यह नोट किया जाता है कि यह वह अवधि थी जब चीन से अन्यथिक ऊंचे स्तर पर आयात शुरू हो गया था और जिसने कीमत कम करके भारतीय बाजार पर कब्जा कर लिया था।

80. अभी हाल ही अप्रैल, 2011 से अक्टूबर, 2011 की अवधि के लिए कच्चे माल की कीमत में अंतर से कार्बन ब्लैक के सस्ते चीनी आयात का परिणाम निकला जिसने अपूरणीय बाजार क्षति की और भारतीय बाजार पर कब्जा कर लिया।

विवरण	अप्रैल-11	अक्टू-11	% वृद्धि
सीबीएफएस	29457	30547	3.70
डीआई बिक्री मूल्य	***	***	7.60
सीबीओ	26,044	24278	(6.78)
चीन सीआईएफ	51989	61232	17.78

81. यह देखा गया है कि सीबीएफएस की कीमतें 3.7% बढ़ी हैं, अप्रैल, 2011 की तुलना में अक्टूबर, 2011 में घरेलू उद्योग की विक्रय कीमत 7.6% बढ़ी हैं। तथापि, अप्रैल, 2011 की तुलना में अक्टूबर, 2011 में सीबीओ की कीमत में 7% की गिरावट आई है लेकिन चीन ने इसकी कीमत 18% बढ़ा दी है। इस प्रकार लगभग 25% (18%+7%) का लागत लाभ होने पर भी डीआई की कीमतें चीन से एडीडी के साथ आयात कीमत लगभग 15% अधिक हैं। इससे स्पष्ट होता है कि कच्चे माल की कीमत में गिरावट होने पर भी चीन अपनी कीमतें बढ़ा सका और अभी भी अपने अन्य प्रतिद्वंदियों की तुलना में कहीं कम कीमतों पर अपने उत्पाद बेच रहा है क्योंकि कार्बन ब्लैक के चीन उत्पादकर्ता, कच्चे माल की कीमतों में अंतर होने के कारण लाभप्रद स्थिति में हैं।

82. कच्चे माल में कीमत भिन्नता निम्नवत देखी जा सकती है:-

	चीन एफबीओ एफओबी यूएस अम0डालर/ मी.टन	सीबीएफएस सीआईएफ भारत यूएस अम0डालर/ मी.टन	सीबीएफएस सीआईएफ भारत और चीन सीबीओ के बीच अंतर यूएस अम0डालर/ मी.टन
जन-11	540	523	(17)
फर-11	548	575	27
मार्च-11	568	617	50
11-अप्रैल	576	652	75
11-मई	574	620	46
11-जून	539	638	99
11-जुला	505	645	140
11-अग.	520	608	88
11-सि.	504	608	104
11-अ.	489	616	126

83. इस प्रकार यह देखा गया है कि कच्चे माल की कीमतों के अंतर, -यूएसडी 17 से बढ़कर यूएसडी 126 हो गए जिससे चीन में कार्बन ब्लैक के तैयार माल की कीमत डीआई की तुलना में कम हो सकी जिससे हाल की अवधि में बाजार में विघटन हुआ और जिसके कारण चीन से कम कीमत वाले आयात में वृद्धि हुई तथा जिससे घरेलू उद्योग के लिए बाजार विघटन का खतरा बना हुआ है, यदि तत्काल इसे नहीं रोका गया तो इसे पुनः प्राप्त करना कठिन हो जाएगा।

84. चीनी उत्पादकों ने उत्पादन की अत्यधिक क्षमताओं का सृजन किया है इसलिए वे बाजार के अवसरों का पता लगा रहे हैं। इसके अलावा, घरेलू उद्योग द्वारा दी गई सूचना के अनुसार चीन का कार्बन ब्लैक बाजार, वर्ष-दर-वर्ष के आधार पर फैल रहा है और इस

प्रकार वे अपने निर्यात का आकार बढ़ा रहे हैं। चीन में कार्बन ब्लैक की क्षमता 5 मिलियन प्रतिवर्ष को पार कर गई है और इसका आउट-पुट 3.4 मिलियन टन है। सदभित देश में सदभित माल की अत्यधिक उत्पादन क्षमता को ध्यान में रखते हुए, जो व्यर्थ पड़ी रहती है तथा उनके निर्यात अभिमुखीकरण और भारत में सदभित माल की बढ़ती मांग को देखते हुए इस बात की पूरी संभावना है कि आयात वर्ष 2011-12 इसके बाद भी वर्ष 2008-09 और 2010-11 की तुलना में भी अधिक बने रहेंगे।

(IX) बाजार विघटन और बाजार विघटन के लिए खतरा

85. सांविधिक ढांचा: “बाजार विघटन” तब होगा जब कभी एक समान वस्तु या घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन की जा रही प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धी वस्तु का आयात तेजी से बढ़ जाता है, यह आयात निरपेक्ष या प्रासंगिक रूप से बढ़ता है, ताकि यह घरेलू उद्योग को सामग्री की हानि का महत्वपूर्ण कारण बने या इससे सामग्री की क्षति की आशंका हो और ‘बाजार विघटन को खतरा’ से यह तात्पर्य है कि इससे बाजार विघटन को स्पष्ट और आसन्न खतरा है।

86. यह देखा गया है कि सीमा प्रशुल्क अधिनियम (विशिष्ट सुरक्षोपाय पारदेशीय उत्पाद शुल्क) नियम, 2002 के नियम 8 के अनुलग्नक में तकनीकी दृष्टि से यह अपेक्षित है कि बाजार विघटन या बाजार विघटन के खतरे का निर्धारण करने के लिए कतिपय सूचीबद्ध कारकों और अन्य संगत कारकों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। ऐसा कोई मूल्यांकन अलग-अलग मामलों में अलग-अलग उद्योगों के लिए अलग-अलग होगा जो किसी मामले विशेष के तथ्यों पर आधारित होगा और संबंधित उद्योग की परिस्थिति पर निर्भर करेगा। प्रत्येक सूचीबद्ध कारक के मूल्यांकन में यह दर्शाना आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक ऐसे कारक में “गिरावट” आ रही है। एक मामले में, उदाहरणार्थ, बिक्री, रोजगार और उत्पादकता में तेजी से गिरावट आ रही हो जिससे घरेलू उद्योग को ‘सामग्री की क्षति’ का पता चलता है और इसलिए यह बाजार विघटन को सही ठहराता हो। दूसरे मामले में कतिपय कारकों में गिरावट न आ रही हो तेकिन समग्र स्थिति से घरेलू उद्योग को ‘सामग्री की क्षति’ की तस्वीर का पता चलता हो। इस प्रकार सभी सूचीबद्ध कारकों और अन्य संगत कारकों की तकनीकी जांच करने के अलावा यह आवश्यक है कि उस उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत कारकों के संदर्भ में घरेलू उद्योग की समग्र स्थिति का मूल्यांकन किया जाए।

2 सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 8ग(7)(ख)

87. तदूसार, बाजार विघटन अथवा बाजार विघटन के खतरे के सभी कारकों का विश्लेषण करने के लिए, जिनका उल्लेख नियमों में किया गया है तथा अन्य कारकों का भी जो बाजार विघटन या बाजार विघटन के खतरे का निर्धारण करने के लिए प्रासंगिक हैं, उन पर विचार किया जाए। किसी एक कारक को स्वाभाविक कारकों के रूप में नहीं माना गया है। संगत व्यापार चक्र और प्रतियोगिता की शर्तों के संदर्भ में उन सभी प्रासंगिक कारकों को, जो प्रभावित उद्योग के लिए प्रासंगिक हैं, विचार में लिया गया है। बाजार विघटन या बाजार विघटन के लिए खतरे का निर्धारण, उस उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले सभी संगत कारकों के संदर्भ में घरेलू उद्योग की समग्र स्थिति के मूल्यांकन पर आधित होता है।

(X) बाजार विघटन:

88. यह पाया गया है कि चीन पीआर से कार्बन ब्लैक के बढ़ते आयात के कारण, नीचे बताए गए कारकों से कार्बन ब्लैक के घरेलू उत्पादकों के बाजार विघटन के लिए खतरा बन गया है:

क. बाजार का हिस्सा: घरेलू उद्योग का बाजार का हिस्सा वर्ष 2011-12 की पहली तिमाही में बढ़ गया है लेकिन इसके बाद इसमें अत्यधिक गिरावट आई है। घरेलू उद्योग में बाजार का हिस्सा वर्ष 2011-12 की पहली तिमाही के 74% से घट कर 2011-12 की तीसरी तिमाही में 57% हो गया। यह वह अवधि थी जब अत्यधिक दर पर भारतीय बाजार में आयात का प्रवेश हुआ और इसने भारतीय बाजार पर कब्जा कर लिया। चीन ने संदर्भगत आयात का बाजार का हिस्सा 2008-09 के 3% से बढ़कर वर्ष 2011-12 (वार्षिक आधार पर) में 11% हो गया। इस अत्यधिक तेजी का कारण घरेलू उद्योग और चीन को छोड़कर अन्य देशों से आयात के बाजार हिस्से में गिरावट होना है।

वित्त वर्ष	तिमाही	कुल आयात	चीन से आयात(मी.टन)	घरेलू उद्योग की विफ़ी (मी.टन)	अन्य भारतीय उत्पादकों की विफ़ी	कुल मांग (मी.टन)	का % बाजार हिस्सा		
							डी आई	चीन से आयात	अन्य देशों से आयात
2008-09		39187	12971	322809	98052	460048	70	3	6

2009-10		63244	17722	400295	119391	582930	69	3	8
2010-11		61185	16724	443430	109537	614152	72	3	7
2011-12	Q1	14828	5789	119327	26073	160228	74	4	6
	Q2	32465	25686	99206	33000	164671	60	16	4
	OCT,11	11489	9335	28225	10217	49931			
	Q3	34467	28005	84675	30651	149793	57	19	4
2011-12 (वार्षिकीकृत)		100769	69960	423014	119632	632923	67	11	5

डब्ल्यूटीओ की अर्जेन्टीना फुटवियर मामला अपीलीय निकाय रिपोर्ट के पैरा 139 के आधार पर

ख. उत्पादन: घरेलू उद्योग के एक्साइज रिकोर्ड द्वारा दी गई उत्पादन की सूचना के आधार पर उत्पादन निर्धारण किया गया है। यह देखा गया है कि वित्तीय वर्ष 2011-12 तक घरेलू उत्पादन बढ़ा है लेकिन अभी हाल की अवधि में इसमें तेजी से गिरावट आई है। घरेलू उत्पादन में लगातार गिरावट आई है जो पहली तिमाही (2011-12) में 163458 मी.टन था वह दूसरी तिमाही (2011-12) में 139746 मी.टन हो गया अर्थात् 14.5% की गिरावट। घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि कार्बन ब्लैक की उत्पादन प्रक्रिया ऐसी है कि घरेलू उद्योग को उत्पाद का अधिक से अधिक उत्पादन करना चाहिए ताकि न केवल पैमाने की भित्तियां प्राप्त की जा सके बल्कि संयंत्र और उत्पादन से जुड़ी निश्चत लागत को भी कम किया जा सके। चूंकि इस उत्पाद की मांग है, इसलिए घरेलू उद्योग ने क्षति की अवधि की तुलना में अपनी क्षमता बढ़ा दी है। तथापि, आयात में इतनी अधिक तेजी सवृद्धि हो रही है कि घरेलू उद्योग द्वारा किए गए इन अतिरिक्त प्रयासों के बावजूद घरेलू उद्योग के साथ माल सूचितयों का स्तर इतना अधिक बढ़ा है कि घरेलू उद्योग को उत्पादन निलंबित करने के लिए बाध्य होना पड़ा। उच्च क्षमता के साथ उत्पादन बढ़ाने का यह अर्थ है कि माल सूची की स्थिति और खराब होगी। घरेलू उद्योग इस बात से संतुष्ट है कि कार्बन ब्लैक के बढ़ते आयात के कारण घरेलू उद्योग द्वारा अभी हाल की अवधि में उत्पादन निलंबित करना पड़ा। घरेलू उद्योग के परिसर में सत्यापन से यह पता चलता है कि बढ़ती मालसूचितयों को रोकने के लिए घरेलू उद्योग के संघटकों ने उत्पादन बंद कर दिया है।

वित्त वर्ष	तिमाही	उत्पादन (मी.टन)	इन्वेंटरी (मी.टन)	प्रतिस्थापित क्षमता
2008-09		416244	3912	500000
2009-10		492863	7594	552500
2010-11		585899	8678	667000
2011-12	Q1	163458	7902	181002
	Q2	148188	11600	181002
	OCT,11	46582	17249	60334
	Q3	139746		181002
2011-12 (वार्षिकीकृत)		614105		724008

ग. बिक्री: बिक्री का निर्धारण घरेलू उयोग द्वारा, अपने उत्पाद कर रिकोर्ड में यथातल्लिखित, कलीयर्ड माल के आधार पर किया गया है।

वित्त वर्ष	तिमाही	उत्पादन (मी.टन)	घरेलू उयोग की बिक्री (मी.टन)	अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	कुल मांग (मी.टन)	घरेलू उयोग द्वारा नियांत (मी.टन)
2008-09		416244	322809	98052	460048	94395
2009-10		492863	400295	119391	582930	89021
2010-11		585899	443430	109537	614152	141383
2011-12	Q1	163458	119327	26073	160228	26434
	Q2	148188	99206	33000	164671	29489
	OCT,11	46582	28225	10217	49931	8576
	Q3	139746	84675	30651	149793	25728
2011-12 (वार्षिकीकृत)		614105	423014	119632	632923	110570

घ. यह देखा जा सकता है (उपर्युक्त तालिका से) कि घरेलू उयोग की बिक्री वित्त वर्ष 2010-11 तक बढ़ी है। इसमें अभी हाल ही की अवधि में वर्ष 2010-11 में 443430 मी.टन से कमी आई है और यह वर्ष 2011-12 में 423014 मी.टन (वार्षिकीकृत) हो गई। जहाँ तक अद्यतन अवधि का संबंध है, सकल रूप से बिक्री जो वर्ष 2011-12 की पहली तिमाही में 119327 मी.टन थी वर्ष

2011-12 की तीसरी तिमाही में घटकर कर 84675 मी.टन रह गई। बिक्री में यह गिरावट इस तथ्य के बावजूद है कि मांग में वार्षिकीकृत आधार पर वृद्धि हुई है।

अवधि	घरेलू उद्योग की बिक्री(मी.टन)	कुल मांग (मी.टन)	मांग के प्रतिशत के रूप में बिक्री
2008-09	322809	460048	71
2009-10	400295	582930	69
2010-11	443430	614152	73
2011-12	Q1 Q2 OCT,11 Q3 (A)	119327 99206 28225 84675	75 61 57 67
2011-12 (वार्षिकीकृत)		423014	632923

- (i) तथापि, यह नोट किया जाता है कि निरपेक्ष संदर्भ में उत्पाद की कुल मांग की प्रतिशतता के रूप में घरेलू उद्योग, पूरे पीओआई (जब एडीडी अधिरोपित किया गया था उस समय 2010-11 को छोड़कर) की बिक्री में गिरावट आई है अर्थात् 71% से घटकर 67% हुई। अभी हाल की अवधि में भी इस गिरावट में तेजी आई है अर्थात् 75% से घट कर 57% हुई है। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि घरेलू उद्योग को निरपेक्ष और मांग की इस्टि से बिक्री में हानि हुई है।
- (ii) घरेलू उद्योग इस बात से संतुष्ट है कि कार्बन ब्लैक के बढ़ते आयात ने घरेलू उद्योग को अपना उत्पादन, घरेलू बाजार में बचने से रोक दिया है। घरेलू उद्योग का मानना है कि आयात से यह वृद्धि इतनी अधिक है कि इससे घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में गिरावट आ गई है। घरेलू बिक्री में यह गिरावट, मांग में वृद्धि के बावजूद है। घरेलू उद्योग को अपने उत्पादन का निर्यात किए जाने के लिए वाध्य किया जा रहा है जबकि घरेलू मांग काफी अधिक है। तथापि, आयात में इतनी तेजी से वृद्धि हुई है कि घरेलू उद्योग भारत से बाहर बाजार के अवसर तलासने के लिए मजबूर हो गया ताकि वह उस उत्पादन को बेच सके जिसे वह घरेलू बाजार में नहीं बेच सका है। ऐसे निर्यात मर्जी से नहीं किए जाते हैं लेकिन घरेलू उद्योग के लिए यह बाध्यता है जो देश में लगातार बढ़ते आयात के कारण बनी है।
- (iii) घरेलू उद्योग ने आगे यह बात भी कही है कि घरेलू और आयातित उत्पाद के बीच कीमत में काफी अंतर है। घरेलू उद्योग ने आगे यह भी कहा कि यद्यपि यह

उत्पाद, बाजार पाटनरोधी शुल्क आकर्षिक कर रहा है लेकिन आयात की मात्रा में कमी नहीं आई है। तथापि, आयात की कीमतें इतनी कम हैं कि चीन की कुछ कंपनियों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क जोड़ने पर भी, आयात की कीमत, घरेलू उद्योग की विक्रय मूल्य से कम हैं। घरेलू और आयातित उत्पाद की कीमत में यह महत्वपूर्ण अंतर अधिक से अधिक उपभोक्ताओं को चीनी उत्पादों के पास ले जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई है। इसके अलावा, उत्पाद की मांग वर्ष 2010-11 से 2011-12(ए) में लगभग 19000 मी.टन बढ़ गई। जबकि आयात लगभग 40000 और टन बढ़ गया है। इससे स्पष्ट होता है कि भारत में विचाराधीन उत्पाद की घरेलू मांग में हुई वृद्धि की तुलना में आयात में कहीं अधिक वृद्धि हुई है जिसके कारण आयात ने भारतीय उत्पादकों के बाजार के काफी बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है जिससे घरेलू उद्योग की बिक्री प्रभावित हुई है जो बाजार विघटन का कारण बना है।

इ. क्षमता का उपयोग: घरेलू उद्योग ने कुछ समय से अपनी क्षमता में वृद्धि की है। घरेलू उद्योग का मानना है कि क्षमता में वृद्धि, बाजार में उत्पाद की वर्तमान और संभावित मांग को ध्यान में रखकर की गई है। यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग ने 2011-12 की पहली तिमाही तक क्षमता बढ़ाई है और क्षमताओं में इन वृद्धियों के बावजूद घरेलू उद्योग 2011-12 की पहली तिमाही में क्षमता का 90% उपयोग करने में सफल रहा। तथापि, इसके बाद क्षमता उपयोग में तेजी से गिरावट आई जो दूसरी तिमाही और तीसरी तिमाही में क्रमशः 82% और 77% रह गई। 2011-12 की तीसरी तिमाही में घरेलू उद्योग की उपयोग क्षमता सबसे कम स्तर पर है। वर्ष 2011-12(ए) की क्षमता विस्तार, 2010-11 की तुलना में 9% थी लेकिन इसी अवधि में आयात के बाजार हिस्से में वृद्धि होने के कारण उपयोग क्षमता में 6% की गिरावट आ गई।

वित्त वर्ष	तिमाही	उत्पादन (मी.टन)	स्थापित क्षमता	क्षमता उपयोग (%)
2008-09		416244	500000	83
2009-10		492863	552500	89
2010-11		585899	667000	88
2011-12	Q1	163458	181002	90
	Q2	148188	181002	82
	OCT,11	46582	60334	77
	Q3	139746	181002	77

2011-12 (वार्षिकीकृत)		601856	724008	83
--------------------------	--	--------	--------	----

च. इन्वेन्टरी: इन्वेन्टरी का स्तर घरेलू उद्योग द्वारा अनुरक्षित उत्पाद कर रिकोर्ड के अनरूप माना गया था। यह देखा जा सकता है कि चौंकि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आ रही है, इस कारण आयात बढ़ रहे हैं। घरेलू उद्योग अपनी बिक्री मात्रा को बढ़ाने में अक्षमत रहा और उसे संचित वस्तु सूची की समस्या का सामना करना पड़ा। वस्तु सूची का स्तर सम्पूर्ण क्षमत अवधि के दौरान अत्यधिक बढ़ा है। अधोलिखित तालिका वस्तु सूची स्तर को दर्शाता है जिसमें वर्ष 2008-09 में 3912 मी.टन की तुलना में तीव्र वृद्धि होकर अक्टूबर 2011 (2011-12 की तीसरी तिमाही) में 17249 मी.टन हो गया। यह वृद्धि वर्ष 2008-09 के स्तर की तुलना में वर्ष 2011-12 में लगभग चार गुनी है जिससे घरेलू उद्योग की दुर्दशा परिलक्षित होती है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया कि बढ़ते हुए आयातों का सामना करने के लिए वस्तु सूची के स्तर में कटौती करने और उत्पादन को व्यवहार्य सीमा तक बनाए रखने के लिए उन्होंने अतिरिक्त निर्यात के प्रयास किए। तथापि चीन से किए जाने वाले आयात में वृद्धि इतनी तीव्र है कि उत्पादन में गिरावट आने के बावजूद घरेलू उद्योग को बढ़ती वस्तु सूची का सामना करना पड़ रहा है।

वित्त वर्ष	तिमाही	उत्पादन (मी.टन)	डीआई की बिक्री (मी.टन)	इन्वेन्टरी (मी.टन)
2008-09		416244	322809	3912
2009-10		492863	400295	7594
2010-11		585899	443430	8678
2011-12	Q1	163458	119327	7902
	Q2	148188	99206	11600
	OCT,11	46582	28225	17249
	Q3	139746	84675	
2011-12 (वार्षिकीकृत)		614105	423014	

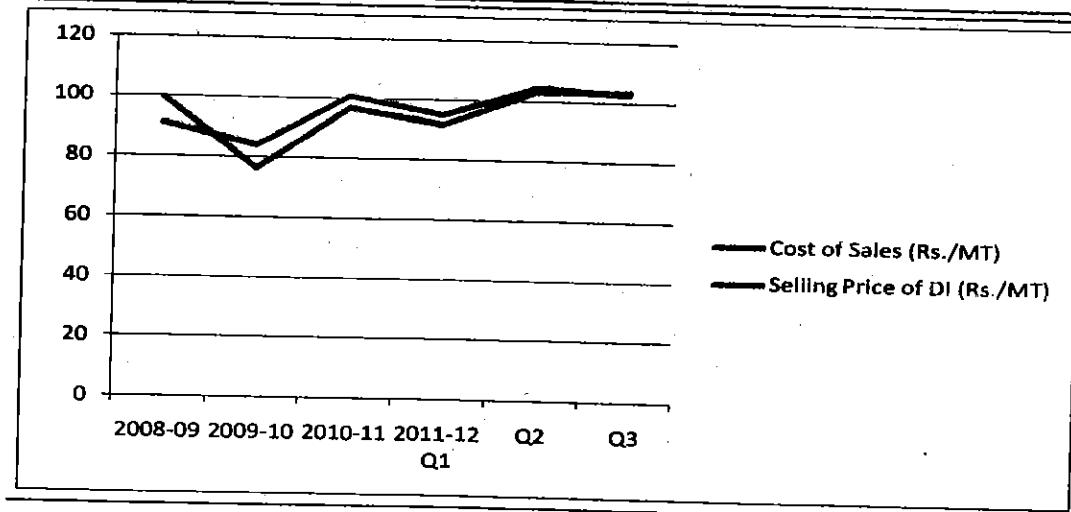
छ. रोजगार एवं उत्पादकता: रोजगार के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अवधि के दौरान रोजगार एवं उत्पादकता दोनों में कमी आई है जैसाकि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है:-

वित्त वर्ष	तिमाही	उत्पादन (मी.टन)	रोजगार (संख्या)	उत्पादकता (प्रति दिन मी.टन)
------------	--------	--------------------	------------------	-----------------------------------

2008-09		416244	1057	1140
2009-10		492863	1133	1350
2010-11		585899	1280	1605
2011-12	Q1	163458	1290	1816
	Q2	148188	1257	1647
	OCT,11	46582	1175	1553
	Q3	139746	1175	1553

ज. लाभ/हानि: घरेलू उद्योग ने कर पूर्व लाभ की सूचना दी है जो पेशेवर लागत लेखाकार द्वारा विधिवत् प्रमाणित है। इसके अतिरिक्त, यह माना जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा बताया गया लाभ इसके केवल घरेलू प्रचालन से संबंधित है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की विचाराधीन उत्पाद के संबंध में महत्वपूर्ण निर्यात गतिविधियाँ हैं। घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात प्रचालनों से अर्जित लाभ को अलग कर दिया गया और संवर्द्धित आयात का घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ पर पड़ने वाले ग्रभाव का विश्लेषण करने के उद्देश्य से इन पर विचार नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के संघटकों के अन्य महत्वपूर्ण प्रचालन भी हैं। तथापि घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ पर केवल घरेलू बाजार में रबड़ अनुप्रयोग के लिए कार्बन ब्लैक के संबंध में विचार कियागया है। यह देखा जाता है कि अत्यधिक हाल के वर्षों में घरेलू उद्योग की लाभदायकता में तीव्र गिरावट आई है। लाभ कमाने की क्षमता में वर्ष 2009-10 में सुधार हुआ परंतु तत्पश्चात् इसमें अत्यधिक कमी आनी शुरू हो गई।

वित्त वर्ष	तिमाही	विक्री लागत (सूचीबद्द)	विक्री मूल्य (सूचीबद्द)	लाभदायकता (सूचीबद्द)
		रुपये/मी.टन	रुपये/मी.टन	रुपये/मी.टन
2008-09		100.0	91.7	-8.3
2009-10		76.7	84.6	7.9
2010-11		97.3	101.5	4.2
2011-12	Q1	92.2	95.6	3.4
	Q2	103.5	105.1	1.5
	Q3	103.8	103.4	-0.3



यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग को वर्ष 2008-09 में घाटा हुआ और उनके द्वारा दिए गए तर्क के अनुसार ये वित्तीय घाटे उत्पाद का पाटन होने के कारण हुए। यह नोट किया जाता है कि पाटनरोधी एवं अन्य सहबद्ध शुल्क महानिदेशलय ने कार्बन ब्लैक के संबंध में पहले भी पाटनरोधी जाँच की थी जिसमें जाँच अधिकारी ने अक्टूबर, 2007 से सितम्बर, 2008 की जाँच अवधि के रूप में विचार किया था। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि वर्ष 2008-09 के दौरान हुआ वित्तीय घाटा मांग में कमी और उत्पाद का पाटन होने के कारण क्षति की वजह से हुआ।

झ. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया कि याचिकाकर्ता कम्पनियों की वार्षिक रिपोर्ट के मुताबिक लाभ में वृद्धि हुई है। तथापि, यह नोटिस किया गया कि वार्षिक रिपोर्ट निष्पादन अनन्य रूप से घरेलू प्रचालनों के लिए विचाराधीन उत्पाद के संबंध में नहीं हैं।

XI बाजार विकृति की चुनौती

89. भारत में आयात, निरपेक्ष संदर्भ के साथ-साथ उत्पादन और उपभोग के संबंध में बड़ी मात्रा में भारतीय बाजार में प्रवेश कर रहा है। सकारात्मक कीमत अंडरकटिंग से पता चलता है कि घरेलू उद्योग के बढ़ते आयात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है। आयात आंकड़ों से यह देखा जा सकता है कि चीन पीआर से आयात, काफी हद तक संदर्भित माल का किया जाता है। माल के लिए घरेलू उद्योग की नियल बिक्री कीमत को ध्यान में रखते हुए चीन पीआर से प्राइस अंडरकटिंग काफी सकारात्मक हैं और इसके सकारात्मक रहने की संभावना है। आयात कीमत और घरेलू बिक्री कीमत में अंतर

इतना अधिक है कि आयात लाभप्रद है और यह आयात बढ़ने का निरंतर आधार बन रहा है।

90. बाजार विघटन के लिए गंभीर खतरा निम्नलिखित कारकों से स्थापित होता है:-

- (क) घरेलू और आयातित उत्पाद के बीच प्रचलित एंटी डंपिंग इयूटी पर विचार करने के बाद भी कीमत में बहुत अधिक अंतर है। इस प्रकार, आयात लाभप्रद बना रहेगा;
- (ख) चीनी उत्पादकों की उपयोग क्षमता बहुत अच्छी है। इसके परिणामस्वरूप वे यथासंभव अतिरिक्त बाजार खोज रहे हैं;
- (ग) कच्चे माल अर्थात् सीधीएफएस और सीवीओ की कीमत के बढ़ते अंतर ने चीनी उत्पादकों को लाभप्रद स्थिति प्रदान की है। इसलिए इस बात की संभावना है कि चीनी उत्पादक भारतीय बाजार में अपनी शक्तिविधि बढ़ा दें;
- (घ) चूंकि ऑटो उद्योग बढ़ रहा है और पौयूआई की मांग भी बढ़ रही है इसलिए भारतीय बाजार लाभप्रद हैं और इसलिए बाजार विघटन का खतरा सन्तुक्त है।

91. घरेलू उद्योग बिक्री के अवसर शब्दों रहा है। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन, क्षमता उपयोग, लाभ, निवेश पर प्रतिलाभ और नकद प्रधान नहीं सुधर रहा है जो कम कीमत बढ़ते आयात के विरंतर जारी रहने के बारण एंटी डंपिंग इयूटी अधिरोपित किए जाने के बावजूद नहीं सुधरा। चीनी उत्पादकों द्वारा दी गई कम कीमत और उनके पास अत्यधिक स्वतंत्र रूप से उत्पादन का नियंत्रण करने की क्षमताओं को देखते हुए घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई कम कीमतों के बावजूद आयात आगे बढ़ रहा है। आयात बढ़ने के साथ ही आयात में बाजार का हिस्सा भी बढ़ा है और घरेलू बाजार का बाजार हिस्सा घटा है जिससे गंभीर बाजार विघटन का खतरा और बढ़ गया है।

XII क्षति के अन्य कारक:

92. इस संबंध में निम्नलिखित प्रासंगिक हैं:-

- क) **उत्पाद की मांग में संभावित गिरावट:** भारत में कार्बन ब्लैक की मांग की कमी नहीं है। पिछले वर्षों में भारत में उत्पाद की मांग में काफी वृद्धि हुई है।
- ख) **उपभोग पद्धति में परिवर्तन:** विचाराधीन उत्पाद से संबंधित उपभोग की पद्धति में कोई बदलाव नहीं आया है। उपभोग की पद्धति में बदलाव आने से घरेलू उद्योग

की क्षति में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

ग) विदेशी और घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और उनके बीच प्रतिस्पर्धा: ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथा नहीं है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।

घ) प्रौद्योगिकी का विकास: उत्पाद का उत्पादन करने की प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसलिए प्रौद्योगिकी का विकास क्षति कारक नहीं है।

ड.) निर्यात कार्य-निष्पादन: घरेलू उद्योग को हुई क्षति का दावा, घरेलू परिचालनों के कारण हुआ है। याचिकाकर्ताओं ने घरेलू परिचालनों के लिए लागत और क्षति संबंधी सूचना प्रदान कर दी है। घरेलू उद्योग के लिए दावा की गई क्षति, निर्यात के कारण नहीं हुई।

अयधि	चौन से एडीडी युक्त आयातों की लैण्डिंग कीमत	निबल बिक्री मूल्य (डीआई) इंडेक्स्ड	निर्यात कीमत (इंडेक्स्ड)
	रुपया प्रति मी.टन	रुपया प्रति मी.टन	रुपया प्रति मी.टन
2008-09	100	115	92
2009-10	98	106	80
2010-11	112	128	92
2011-12 (अक्टूबर तक)	126	143	121

ऊपर दी गई आंकड़े की सारणी से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग की निर्यात कीमत हमेशा ही घरेलू बिक्री कीमत से कम रही है। निर्यात कीमत से कहीं अधिक कीमत पर सुधृद घरेलू माग होने के बावजूद घरेलू उद्योग को माल का निर्यात करना पड़ा है। इसको ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के लिए निर्यात लाभ योग्य विकल्प नहीं है। हानियों को कम से कम करने के लिए घरेलू उद्योग को निर्यात करना पड़ा है। इस प्रकार यह नहीं कहा जा सकता है कि घरेलू उद्योग के लिए निर्यात प्राथमिकता है। इसके अलावा रिकोर्ड पर ऐसा कोई सबूत नहीं लाया गया है जिससे यह पता चले कि घरेलू उद्योग ने भारत से उपयोगकर्ता उद्योग को घरेलू आपूर्ति करने से इंकार कर दिया है और इसके बजाए उन्होंने

स्वयं निर्यात् का सहारा लिया है। यह तथ्य कि घरेलू उद्योग को घरेलू बिक्री कीमत से कम कीमत पर निर्यात करना होता है, यह दर्शाता है कि आयात में वृद्धि, ग्रांग-आपूर्ति के अंतर के कारण नहीं है।

XIII बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती और सम्बद्धित आयात के बीच आकस्मिक संबंधः

93. उत्पादकों अधिकांशत आयात की तुलना/प्रतिस्पर्धा में बेचा जाता है। आयातों की लैण्डेड प्राइस घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से अत्यधिक कम है। संबंधित उत्पाद के आयात घरेलू उद्योग से न्यूनतम कीमत पर उपलब्ध हैं। परिणामस्वरूप, उपभोक्ता बढ़ चढ़कर आयात कर रहे हैं, इससे घरेलू उद्योग पर उप-आप्टिमल कीमत पर माल देने का दबाव डाला जा रहा है। घरेलू उद्योग के बिक्री अवसर समाप्त हो रहे हैं। परिणामस्वरूप, कम कीमत पर आयों की सतत उपस्थिति के कारण उत्पादन, क्षमता उपयोग, लाभ, निवेश पर आवक कम हो रहा है। आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतें कम की जा रही हैं। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को लाभ और निवेश पर आवक में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निर्यात, चीन से कार्बन ब्लैक के सम्बर्धित आयातों का ही परिणाम है। अतः यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग को बढ़े हुए आयातों के कारण ही क्षति हुई है।

चीन से आयात (इन्डेक्सड)

	घरेलू उद्योग की निवल बिक्री	आयात का सीआईएफ मूल्य	आयातों की लैण्डेड कीमत एडीडी के बिना	एडीडी से निर्यात लैंडिड आयात कीमत	एडीडी से कीमतों में कमी	एडीडी के बिना कीमतों में कमी
	रु0/मी.टन	रु0/मी.टन	रु0/मी.टन	रु0/मी.टन	रु0/मी.टन	रु0/मी.टन
2008-09	100.0	81.6	86.6	No ADD	—	13.4
2009-10	92.2	74.2	78.9	85.1	7.1	13.3
2010-11	110.6	85.1	90.4	97.2	13.4	20.2
2011-12 (अक्टू. तक)	124.3	96.6	102.6	109.4	14.9	21.7

94. घरेलू उद्योग का निष्पादन दर्शाता है कि पीओआई के दौरान कार्बन ब्लैक की मांग में बढ़ोतरी के बावजूद घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा कम हुआ है और आयातों का बाजार हिस्सा बढ़ा है। यह भी स्पष्ट है कि चीन से एडीडी सहित और एडीडी के बिना, दोनों में प्राइस अण्डरकटिंग बढ़ी है। इसके अतिरिक्त आयातों की लैण्डेड कीमत और घरेलू बिक्री कीमत के बीच अन्तर अत्यधिक और यह वर्ष 2008-09 से लगातार बढ़ रहा है।

95. यह देखा गया कि अभी हाल ही की अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और चीनी से एडीडी सहित आयात की लैण्डेड कीमत में कीमत अन्तर कम होने के बावजूद आयात की मात्रा में बढ़ोतरी हुई है। इससे गम्भीर बाजार विकृति हुई है और इससे सम्पूर्ण रूप से घरेलू उद्योग को नुकसान पहुंचा है जिससे बढ़े हुए आयात और कारित विकृति में आकस्मिक सम्पर्क जुड़ा है।

XIV जनहित:

96. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि रक्षोपाय शुल्क लगाना जनहित में नहीं होगा क्योंकि कार्बन ब्लैक सबसे बड़ा उपभोक्ता अर्थात टायर उद्योग विभिन्न इनपुटों पर पहले से ही पाठनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क का सामना कर रहा है। विभिन्न प्रतिस्पर्धी हितबद्ध आर्थिक प्रचालकों और पब्लिक का परीक्षण किया गया है। इसि संबंध में रक्षोपाय कानून के प्रमुख उद्देश्य, ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है जो यह है कि बढ़े हुए आयातों से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का निराकरण किया जाए। स्वस्थ एवं प्रतिस्पर्धी उद्योग के हित को ध्यान में रखना सभी के हित में है। यह स्पष्ट है कि यदि अनन्तिम रक्षोपाय उपाय नहीं किए जाते हैं तो घरेलू उद्योग की कीमतों और उनका बाजार हिस्सा दोनों कम हो जाएंगे जिसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को अवहनीय सीमा तक धाटा होगा और उसके परिणामस्वरूप रोजगार तथा घरेलू बाजार को प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए आवश्यक कार्यनीतिक और आर्थिक हित की क्षति होगी। रक्षोपाय शुल्क लगाने से घरेलू उद्योग प्रतिस्पर्धी बना रहेगा और साथ ही, उपयोग करने वाले और केता दोनों के पास अपनी भौतिक जरूरतों को प्रतिस्पर्धी कीमतों पर प्राप्त करने की व्यापक च्याइस होगी।

97. आयेदक ने प्रस्तुत किया है कि उपभोक्ता के लिए कार्बन ब्लैक की लागत 6% के क्षेत्र में होगी (यह तथ्य टायर उद्योग की वार्षिक रिपोर्ट से सत्यापित किया जा सकता है)। इसके अतिरिक्त, भारत में उत्पाद के लिए होने वाली मांग में चीन का बाजार हिस्सा, आयातों में अधिकता अवधि के दौरान 11% के लगभग था। हालांकि उपभोक्ताओं को चीन से कार्बन ब्लैक का आयात करने की जरूरत नहीं है और इस उत्पाद की देश में मौजूदा

और सम्भावित मांग को पूरा करने की घरेलू उद्योग के पास पर्याप्त क्षमता है। यदि यह तर्क भी दिया जाता है कि उपभोक्ता उद्योग को चीन से समान स्तर पर उत्पाद का आयात जारी रखना चाहिए और रक्षोपाय शुल्क लगाने से चीन से आयातों पर उपभोक्ता की लागत 30% बढ़ जाएगी, इससे यह स्पष्ट होता है कि उपभोक्ता उद्योग पर प्रभाव किसी भी हाल में 0.33% से अधिक नहीं होगा।

98. उपर्युक्त हिस्से और कार्बन ब्लैक की अमहत्वपूर्ण लागत को देखते हुए, यह नोट किया जाता है कि रक्षोपाय शुल्क को टायर उद्योग की कीमत पर शून्य या बहुत कम(0.19%) प्रभाव पड़ेगा।
99. पुनः यह नोट किया जाता है कि टायरों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की 3 जांचे पहले ही की जा चुकी हैं और एक जांच चल रही है। इसलिए, टायर उद्योग पाटनरोधी शुल्क के आवरण में सुसंरक्षित है। उपभोक्ताओं द्वारा यह प्रदर्शित नहीं किया गया है कि रक्षोपाय शुल्क का उपभोक्ताओं पर प्रभाव असहनीय होगा। साथ ही घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि चीन का बाजार हिस्सा देखते हुए प्रस्तावित रक्षोपाय शुल्क का उपभोक्ता उद्योग पर नगण्य प्रभाव होगा। घरेलू उद्योग ने पुनः उल्लेख किया है कि प्रस्तावित रक्षोपाय शुल्क लगाने के परिणामस्वरूप वह कीमतों में वृद्धि नहीं करेगी। जहाँ तक कार्बन ब्लैक पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि चीन पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के बावजूद भारतीय बाजार में अत्यधिक आयात होते रहे जिससे घरेलू उद्योग को क्षति पहुंची। इसलिए चीन जन गण से कार्बन ब्लैक का आयात करने पर रक्षोपाय शुल्क लगाना जन हित में होगा।

XV संवेदनशील परिस्थितियों

100. “संवेदनशील परिस्थितियों” का आशय उन परिस्थितियों से है जिनसे यह स्पष्ट है कि आयात इतनी अधिक मात्रा में और ऐसी परिस्थितियों में हुए कि घरेलू उद्योग की बाजार विकृति हुई या बाजार विकृति की चुनौती उत्पन्न हो गई और अनन्तिम रक्षोपाय शुल्क लगाने में देरी से घरेलू उद्योग के अपूरणीय क्षति होगी⁵।

क. संवेदनशील परिस्थितियों की मौजूदगी का निर्धारण करने के लिए आयातों में अचानक बढ़ोत्तरी, घरेलू उद्योग का निष्पादन और कच्चे माल में बढ़ते अन्तराल पर विचार किया गया। इस उद्देश्य के लिए घरेलू उद्योग के अभी हाल ही के

मासिक निष्पादन का विश्लेषण किया गया जो निम्नलिखित सारणी से देखा जा सकता है।

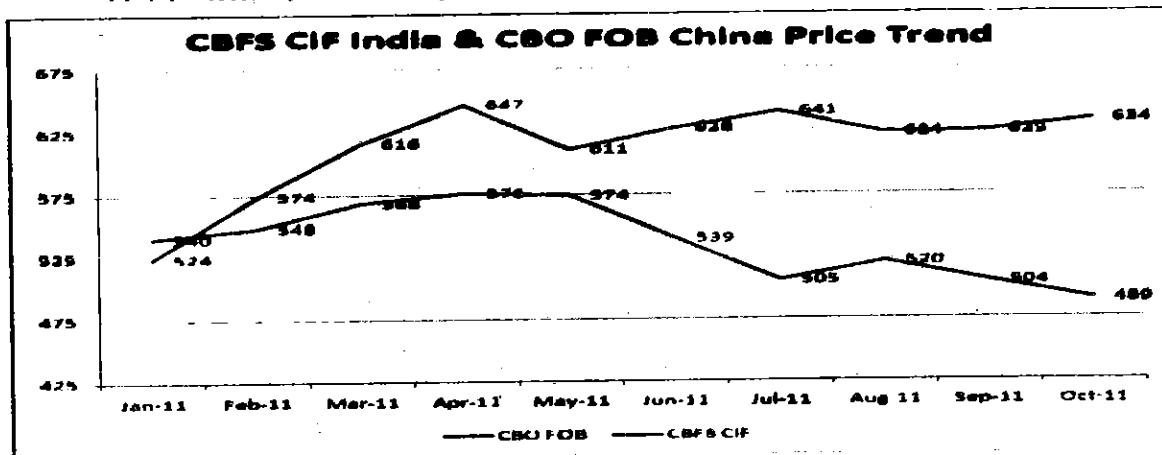
	यूनिट	11-Apr	11-May	11-Jun	11-Jul	11-Aug	11-Sep	11-Oct
उत्पादन	मी.टन	54767	54150	54542	54751	48127	45311	46582
क्षमता उपयोग	%	91	90	90	91	80	75	77
बिक्री-घरेलू	MT	41003	39150	39173	38337	31757	29112	28225
क्लाइंग स्टॉक	MT	8459	7559	7902	10609	11687	11600	17249
कुल आयात	MT	6470	3886	4471	8879	9084	14507	11489
चीन से आयात	MT	1,692	1,245	2,849	6,530	6,674	12,482	9,335
घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा.	%	73.01	75.69	74.85	65.85	61.26	53.30	56.53
चीन का बाजार हिस्सा	%	3.01	2.41	5.44	11.22	12.87	22.85	18.70

⁵ सीमा शुल्क (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियमावली, 2002

ख. अभी हाल ही में चीन का बाजार हिस्सा अत्यधिक बढ़ा है और आयात मात्रा में यह वृद्धि उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क होने के बावजूद हुई है। चूंकि आयात की इकाई लागत भी बढ़ी है, कीमत कोई तथ्य नहीं है, और क्षति मुख्यतः आयात वृद्धि के कारण हई। घरेलू उद्योग पर उत्पादन कम करने का दबाव डाला गया। घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में अत्यधिक कमी आई। आयातों में हुई वृद्धि के कारण बिक्री में गिरावट से अभी हाल ही की अवधि में घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में तीव्र गिरावट आई। घरेलू उद्योग की इन्वेंट्रीज में अत्यधिक वृद्धि हो रही है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग को कार्बन ब्लैक प्रचालनों के कारण वित्तीय क्षति हो रही है और लाभदायकता नगण्य है।

ग. यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग कार्बन ब्लैक का विनिर्माण करने के लिए सीबीएफएस को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करता है जबकि चीन के उत्पादक सीबीओ का प्रयोग करते हैं। दोनों कच्चे माल के बीच कीमत का अन्तर चीन के उत्पादकों को लागत लाभ प्रदान करता है जिससे चीन के कार्बन ब्लैक की कीमतें कम हो जाती हैं। इसकी वजह से चीन के कार्बन ब्लैक का भारतीय बाजार

में आयात हुआ जिससे घरेलू उत्पाद को क्षति हुई। कच्चे माल में कीमत अन्तर को निम्नलिखित ग्राफ से देखा जा सकता है:-



घ. इस प्रकार प्रारम्भिक विर्धारण यह दर्शाता है कि अभी हाल ही की अवधि बढ़ती हुई यूनिट कीमत पर चीन से अत्यधिक आयात, घरेलू उत्पाद का कमज़ोर निष्पादन और कार्बन ब्लैक का विनिर्माण करने वाली कच्ची सामग्री की कीमत में बढ़े हुए अन्तर की वजह सह बाजार विकृति हुई और इस मामले में संवेदनशील परिस्थितियों का सृजन हुआ। उपर्युक्त के मद्देनजर, घरेलू उत्पादकों को बाजार विकृति से होने वाली क्षति जिसे यदि रक्षोपाय उपाय करने में विलम्ब किया गया तो बाद में सुधार पाना मुश्किल होगा, से बचाने के लिए अनन्तिम रक्षोपाय शुल्क तत्काल लगाने को न्यायोचित ठहराने वाली संवेदनशील परिस्थितियाँ मौजूद हैं।

XVI. हितबद्ध पक्षकारों के विचारों पर टिप्पणियाँ:

101. तत्काल रक्षोपाय जाँच शुरू करने के मद्देनजर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा जताई गई आशंका का संक्षेप में निराकरण किया जाता है।

क. जहाँ तक इस तर्क का संबंध है कि सितम्बर और अक्टूबर, 2011 के दौरान आयात में वृद्धि से प्रवृत्ति नहीं झलकती है और यह एक असामान्यता है, यह पाया गया है कि विचाराधीन उत्पाद के आयात समस्त क्षति अवधि के दौरान सकल रूप में बढ़े हैं जबकि अभी हाल ही की अवधि में इनके आयातों में तीव्र वृद्धि हुई है। हाल की अवधि में आयात में अचानक तीव्र और अत्यधिक वृद्धि हुई। चीन से आयात जो वर्ष 2009-09 में 12971 मी.टन था वित्त वर्ष 2011-12 की द्वितीय

तिमाही में तीव्र वृद्धि होकर 25686 मीटन हो गए जिससे महत्वपूर्ण वृद्धि प्रदर्शित होती है। आयात में वृद्धि विश्लेषण केवल दो माह के आंकड़ों पर ही आधारित नहीं है। वर्ष 2011-12 में समग्र रूप से झंजी आयातों में वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

ख. इस तर्क के संबंध में कि मैं ० पीबीसीएल और मैं० हाई टेक निर्यात केन्द्रित कम्पनियाँ हैं, यह उल्लेख कियाजाता है कि मैं० पीबीसीएल और मैं० हाई टेक निर्यात केन्द्रित कम्पनियाँ नहीं हैं। वास्तव में आवेदकों द्वारा यह तर्क दिया गया था कि चीन से आयात में अत्यधिक वृद्धि का सामना करते हुए याचिकाकर्ता कम्पनियाँ उत्पाद का महत्वपूर्ण निर्यात कई देशों को करने लगी हैं। तथापि विरोधी पक्ष ने उपर्युक्त दावे के समर्थन में पर्याप्त जानकारी नहीं दी है। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की इन्वेन्ट्रीज में भी, उत्पाद में कटौती और क्षमता उपयोग के बावजूद, अत्यधिक वृद्धि हुई।

ग. इस तर्क के संबंध में कि घरेलू उद्योग को कीमत में ह्रास/दमन नहीं हुआ, यह पाया गया कि व्यून कीमत वाले आयात की उपस्थिति के कारण आयातों की लैण्डिंग कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत कम होने से कीमत में अत्यधिक कटौती हुई। इसके अतिरिक्त आवेदक लागत में वृद्धि के अनुरूप अपनी कीमत बढ़ाने में अक्षम थे। परिणामस्वरूप अभी हाल ही की अवधि में घरेलू उद्योग को नुकसान सहन करना पड़ा जिससे स्पष्टतः कीमत ह्रास और दमन हुआ।

घ. हितबद्ध पक्षकारों ने दोनों शुल्कों को एक साथ लगाए जाने की वांछनीयता के विरोध में तर्क दिया है। उन्होंने यह भी प्रस्तुत किया है कि दोनों शुल्क एक साथ लगाना जनहित में नहीं होगा। इस मुद्दे का विश्लेषण किया गया। यह तथ्य है कि पाटित आयातों के दुष्प्रभावों को टैरिफ बैरियर बढ़ाकर निष्प्रभ करने और उसका प्रतिवाद करने का एक उपचारी उपाय है। रक्षोपाय शुल्क बढ़े हुए आयातों के नुकसानदायक प्रभाव से घरेलू उद्योग की टैरिफ बैरियर बढ़ाकर रक्षा करने का एक उपाय है। दोनों ही शुल्कों का एक समान कार्य है अर्थात् अन्य कार्यों के साथ-साथ आयातों के क्षतिकारक प्रभावों को निष्क्रिय बनाना। वर्तमान आवेदन दायर करने के लिए घरेलू उद्योग कानूनन व्यायोचित ठहराया जाता है। डब्ल्यूटीओ कानून भी इसकी अनुमति देते हैं। हितबद्ध पक्षकारों ने घरेलू या अन्तर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करने का कोई मुद्दा नहीं उठाया है। यह भी नोट किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क विभिन्न जाँच अवधि पर आधारित था जबकि वर्तमान

रक्षोपाय शुल्क का प्रस्ताव अभी हाल की अवधि के आधार पर किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के बावजूद घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है। तथापि, यह स्पष्ट किया जाता है कि प्रस्तावित रक्षोपाय शुल्क में पहले से ही मौजूद पाटनरोधी शुल्क को ध्यान में रखा जाएगा। अतः एक ही क्षति के लिए दोहरा संरक्षण नहीं होगा।

ड. प्रतिस्पर्धा विधि की अनुप्रयोज्यता के प्रश्न के संबंध में प्राधिकारी नोट करता है कि सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अधीन शक्तियों का प्रयोग करके रक्षोपाय शुल्क या अन्य शुल्क की लेवी या गैर-लेवी विधायी कार्य होने के कारण प्रतिस्पर्धा आयोग द्वारा न्यायिक पुनरीक्षा की विषयवस्तु भी नहीं होगी। दोनों अधिनियम विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग प्रचालन करते हैं।

XVII निष्कर्ष एवं संस्तुति:

102. उपर्युक्त प्रारंभिक निष्कर्षों के आधार पर यह देखा जाता है कि चीन जनवादी गणराज्य से कार्बन ब्लैक के बढ़े हुए आयात के कारण कार्बन ब्लैक के घरेलू उद्योग/उत्पादकों के लिए बाजार विकृति हुई है या बाजार विकृति की चुनौती सृजित की है। ऐसी संवेदनशील परिस्थितियों मौजूद हो गई है जिनमें विशिष्ट रक्षोपाय का कार्य करने में जरा सी भी देरी से क्षति होगी जिसका सुधार करना मुश्किल होगा, इसलिए बाजार विकृति और बाजार विकृति की चुनौती का अनन्तिम निर्धारण लम्बित रहने पर, 200 दिनों की अवधि के लिए अनन्तिम विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क का तत्काल अनुप्रयोग आवश्यक हो गया है। घरेलू उत्पादकों(गोपनीय) द्वारा कार्बन ब्लैक की औसत उत्पादन लागत, लगाई गई पैंजी पर तर्क संगत लाभ, आयात शुल्क के वर्तमान स्तर और कार्बन ब्लैक की औसत आयात कीमत पर यिचार करते हुए अध्याय शीर्षक 28930010(रबड़ अनुप्रयोगों के लिए) के अन्तर्गत आने वाले कार्बन ब्लैक पर इस समय प्रभावी उपभोज्य पाटनरोधी शुल्क को घटाकर यथामूल्य 30 % की दर से विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क, जिसे घरेलू उद्योग के हितों की रक्षा करने के लिए न्यूनतम जरूरत माना जाता है, चीन जनवादी गणराज्य से सम्बद्ध वस्तु के आयात पर, लगाने की संस्तुति की जाती है।

XVIII आगामी प्रक्रिया:

क) विभिन्न पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी, यदि जरूरी हुआ तो, सत्यापन के अध्यधीन होगी जिसके लिए उन्हें अलग से सूचित किया जाएगा।
 ख) अन्तिम निर्णय करने से पहले उचित समय में एक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की जाएगी जिसकी तारीख की जानकारी अलग से दी जाएगी।

[फा. सं. डी-22011/12/2011]

इन्द्राणी दत्त मजूमदार, महानिदेशक

DIRECTOR GENERAL (SAFEGUARDS)
NOTIFICATION

New Delhi, the 16th March, 2012

Subject : Safeguard investigation concerning imports of Carbon Black—Preliminary findings-Reg. G.S.R. 155(E).—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 and the Custom Tariff (Transitional Product Specific Safeguard Duty) Rules, 2002 thereof;

(A) Procedure

1. An application has been filed before me Under Rule 5 of the Custom Tariff (Transitional Product Specific Safeguard Duty) Rules, 2002 by M/s. Association of Carbon Black Manufactures, 5A Raba Kailash, 55/4 Ballygunge Circular Rd. Kolkata-700019 on behalf of two of its member companies; i.e. M/s. Phillips Carbon Black Limited, 31, Netaji Subhash Road, Kolkata-700001, and M/s. Hi-Tech Carbon Murdhwa Indl Area, P.O. Renukoot, Dist: Sonebhadra (U.P.) for imposition of Safeguard Duty on imports of Carbon Black into India, to protect the domestic producers of Carbon Black against market disruption and threat of market disruption caused by the increased imports of Carbon Black into India from China PR.
2. Having satisfied that the requirements of Rule 5 were met with, safeguard investigation against imports of Carbon Black from China PR was initiated vide notice of initiation dated 2nd December, 2011 and published in the Gazette of India, Extraordinary on the same day.
3. A Copy of the Notice of Initiation dated 2nd December 2011 along with copy of non-confidential version of the application filed by the domestic industry were forwarded to the Central Government in the Ministry dealing with Commerce and other Ministries concerned, Govt. of India through their embassy in New Delhi and other interested parties listed below in accordance with Rule 6(2) & 6(3) of the Safeguard Rules'02:

(I) Domestic Producers

- a. M/s. Phillips Carbon Black Limited, 31, Netaji Subhash Road, Kolkata-700001
- b. M/s. Hi-Tech Carbon Murdhwa Indl Area, P.O. Renukoot, Dist: Sonebhadra (U.P.)
- c. Continental Carbon India Limited, A-14 Industrial Area No. 1 South Side of GT Road Ghaziabad-201 001
- d. Ralson Carbon Black Ltd. Jitwal Kalan Tehsil Malerkotla Distt. Sangrur Punjab
- e. Cabot India Limited MIDC Plot No.3 Trans -Thane Creek area Thane Belapur Road Post Ghansoli Thane 400701 Maharashtra
- f. Himadri Chemicals & Industries Limited Registered Office Fortuna Tower 23-A, Netaji Subhas Road 8th Floor, Kolkata 700 001

(II) Importers

- a. M/s JK Tyres, Link House, 3, Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi - 110 002
- b. M/s Birla Tyre, Shivam Chambers 53, Syed Amir Ali Avenue, Kolkata-700 019, West Bengal.
- c. M/s Apollo tyres, Apollo House 7, Institutional Area, Sector-32, Gurgaon -122001 (Haryana)
- d. M/s CEAT Ltd., CEAT Mahal, 463, Dr. Annie Besant Road, Worli, Mumbai 400 030
- e. M/s MRF Ltd., 124 Greams Road, Chennai-06
- f. M/s Ralson, Plot No: 3, New Industrial Area, Mandideep, Distt. Raisen, M.P. – 462046
- g. M/s. Poddar Tyre, GT Road Jugiana, Ludhiana (PB) 141420
- h. M/s. Oriental Rubber Industries, 525 Koregoan Bima Pune Nagar Road, Pune
- i. M/s Hindustan Rubber, I Janki Center OFF Veera Desai Road Andheri(W) Mumbai-53

- j. M/s Agarwal Rubber, 15-1-503/49/A, Ashok Market, Siddiamber Bazar, Hyderabad 500 01, Andhra Pradesh
- k. M/s Exel Rubber, Flat no. 507, Sai Sadan Apts, Opp. SBI Balkampet, S.R. Nagar, Hyderabad - 500038
- l. M/s Tega Industries, First floor, No 210, 5th Main Road Vijay Nagar 2nd Stage Bangalore 560040
- m. M/s Phoenix Yule, Ideal Plaza, 4th Floor, 11/1, Sarat Bose Road, Kolkatta 600 02, West Bengal
- n. M/s Monotona Tyres, Mumbai, Mumbai 422 01, Maharashtra
- o. M/s TVS Srichakra, Perumalpatti road Velaripatti Road, Melur Taluk Madurai-625122
- p. M/s Ahuja Continental, 1109 Mittal Towers MG Road Bangalore
- q. M/s Midas Rubber, P. John Zachariah Buildings, Kottayam, Kerala, 686001
- r. M/s Tolins, M.C. Road, Kalady-683 574, Kerala
- s. M/s TM Tyres, 5-35, Survey No, 305 & 321 Kalakal Village Medak - 502320, Andhra Pradesh
- t. M/s Hartex Rubber, 6-3-865, Madhupala Towers, Ameerpet, Hyderabad- 500 016

(III) Exporters

- a. Hebei Daguangming Industry Group Co., Ltd., Western Side, Donghuan South Road, Shahe City, Hebei Province. P.R.China.
- b. Shanghai Kargas International Trade Co., Ltd., T2-12F, No. 2601 Xietu Rd, Shanghai, P. R. China
- c. Hebeijing country xinyuan rubber Chemical Co Ltd., Shengli road Guangsha district 31-1-101, Hengshui city, Hebei province, P.R.China
- d. Hebei Yonghui Chemical Industries Import and Export Co., Ltd., No.199, Xinhua Road, Shijiazhuang, Hebei, P. R. China
- e. Gansu Jinshi Chemical Co., Ltd., 109 #, West suburb, Minle County, Gansu, P. R. China
- f. Shandong Shuangyan Chemical Co., Ltd., NO.787 Donger Road Dongying City, Shandong, P.R China
- g. Weifang Longzhou Industry and Commerce Co., Ltd., Luocheng Town, Shouguang City, Shandong Province. P.R.China
- h. Laiwu Taishan Carbon Black Co., Ltd., Gaozhuang industrial zone, Laicheng, Laiwu, P.R.China
- i. Qichang Chemical Co., Ltd., Beichenwang, tangyin County, Anyang City, Henan Province, P. R. China
- j. Jiangxi Black Cat Carbon Black Co., Ltd., Liyao, Jingdezhen City, Jiangxi Province, 333000, P.R.China Suzhou Boahua Carbon, Xushuguan Suzhou, P.R. China-21515

4. Questionnaires were sent to the known exporters from China PR, known importers/users in India and other interested parties as per the information available including the Govt. of China PR with request to make their views known in writing within 30 days of the initiation notice.

5. Request to consider them as interested parties was received from M/s Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA) and the request was accepted.

6. Requests for an extension of time to submit their replies were made by the following parties:

- a. Exporting Nation, China PR.
- b. Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA)
- c. Jiangxi Black Cat Carbon Black Inc. Ltd. , China.

7. After taking into account the time limits for completing the investigation within the prescribed period, requests for extension of time to submit reply as per Rule 6(4) of Safeguard Rules'2002 were allowed.

8. The information presented by the applicant was verified by onsite visits to the plants of the domestic producers. The non confidential version of verification report is kept in the public file.
9. All the views expressed by the interested parties have been taken into account in making appropriate determination. The non confidential information received or acquired has been kept in the public file.

(B) Views of Domestic Producers (Applicant)

10. The product under consideration is 'Carbon Black used in rubber applications'. It is an inorganic chemical used in production/ processing of rubber (including tyres), as reinforcing filler. Carbon Black is also known as acetylene black, channel black, furnace black, lamp black, lampblack, thermal black, and noir de carbone. Carbon black for rubber applications is the Carbon black that is used in production/ processing of rubber (including tyres), as a reinforcing filler. The petition is in respect to increased imports of Carbon black used in rubber applications. Carbon black used in non-rubber applications, such as inks in copiers and computer printer cartridges, paints, crayons and polishes, is not within the scope of the present investigation. The subject goods fall under Chapter 28 of the Custom Tariff Act under subheading no. 28030010.
11. There are four more producers of the goods but the applicants, companies M/s. Phillips Carbon Black Limited and M/s. Hi-Tech Carbon account for more than 80% of production and hence are major producers.

SN	Year	Petitioners	Other Indian producers	All Indian producers
		%	%	%
1	2008-09	81	19	100
2	2009-10	80	20	100
3	2010-11	84	16	100
4	11-12 (Q1)	85	15	100
5	11-12 (Q2)	83	17	100
6	11-12 (Q3)	82	18	100

12. The Imports of the product under consideration have increased throughout the injury period in absolute terms with a sharp increase in imports in the most recent period. There is a sudden, sharp and significant increase in imports in the recent period. Imports have also increased in relation to production in India throughout the injury period with a significant increase in the most recent period. It would thus be seen that imports of product under consideration have shown recent, sudden, significant and sharp increase. The condition prescribed under the rules in this regard is clearly met.
13. The product under consideration has history of dumping causing injury to the Indian industry of product under consideration.
14. The import and injury related data for 4 year period has been filed by the applicant. The petitioner has provided the quarter wise information for the year 2011-12.
15. Unforeseen development which has lead to increase in imports is that the prices of CBFS have been increasing throughout the injury period which has lead to global increase in the prices of Carbon Black. However, the Chinese producers have not increased their prices, due to availability of cheap CBO resulting in Chinese Carbon Black becoming cheaper vis-à-vis domestic industry and other third countries suppliers.
16. The Chinese producers have created significant production capacities and are therefore looking for market opportunities. Considering the huge production capacities of the subject goods in

subject country and their export orientation and the increasing demand for the subject goods in India, in all likelihood imports will continue to remain high, causing market disruption to the domestic industry.

17. Demand of the product concerned has increased throughout the injury period
18. Increased imports have led to increase in market share of imports and reduction in market share of the domestic industry. Decline in market share of the domestic industry has adversely impacted the production and capacity utilization of the domestic industry
19. Production of the domestic industry increased year-wise throughout the injury period. However, quarterly analysis shows that the production increased till Apr-June 2011 but thereafter declined significantly in the next two quarters. The month-wise analysis shows that the production of the domestic industry declined. Further, the domestic industry has contended that its production is likely to decline further in Nov.-Dec., 2011
20. It is also important to note, as regards annual trends, that the domestic industry has added significant capacities to meet the demand of the product by the consumers. However, whereas the domestic industry added capacities to serve the consumers, the consumers have resorted to huge imports of the product from China.
21. The sales volume of the domestic industry declined in 2011-12. While quarterly analysis shows a significant decline in sales volume of the domestic industry in the most recent period. Sales have also declined drastically month-wise. The decline in sales volumes on annual basis is despite increase in demand and production. Thus, while demand and production increased on annual basis, the sales of the domestic industry declined
22. Landed price of imports is significantly lower than the selling price of the domestic industry. Landed price of imports is significantly lower than the cost of sales. The imports are significantly undercutting the domestic prices. The price undercutting is resulting in increased imports and is causing price suppression. The petitioner submits that the input prices and cost of production have significantly increased. But the domestic industry is unable to increase the selling price in proportion to increase in costs due to availability of cheap imports from subject country in the Indian market.
23. Capacity utilized by the domestic industry for production of the product under consideration for sale in the domestic market has declined. The capacity utilization of the domestic industry declined as compared to the preceding years. The domestic industry has in fact reduced production in the most recent period.
24. Also the domestic industry is faced with significant accumulated inventories. The levels of inventories have increased throughout the injury period with a significant increase in the most recent period.
25. Profitability of the domestic industry has steeply declined in the recent period. The cost of sales of the product under consideration has increased throughout the injury period. But the domestic industry was unable to increase its selling price in proportion to the cost of sales due to increasing price of raw material and presence of cheap imports. Consequently the profits earned by the domestic industry have declined throughout the injury period.
26. It is important to note that the period 2008-09 is the period when the domestic industry was facing injury due to dumping of the product in the Country. Thus, the losses in the year 2008-09 reflect impact of dumping on the domestic industry. This dumping was from a number of countries, including China. The investigations conducted by the Designated Authority on Anti Dumping led to imposition of anti dumping duty. Performance of the domestic industry improved after imposition of anti dumping duties.
27. The return on investments also followed the same trend as that of profits. The return on investments declined year-wise as well as quarterly due to presence of increased imports
28. In addition to the market disruption already inflicted on the domestic industry, increased imports of Carbon Black are threatening market disruption to the domestic industry.

29. There are no other factors that may be attributing to the market disruption to the domestic industry other than dumping and the low priced imports. Dumping of the product from China PR (and other countries) caused significant injury to the domestic industry. However, the Designated Authority has already recommended imposition of anti dumping duties on such dumped imports. Therefore, the current injury to the domestic industry is after taking into account the injury caused to the domestic industry from dumped imports.

30. The interim measures are imperative in view of the steep deterioration in performance of the domestic industry as a result of increased imports of the product under consideration.

31. Petitioners requested imposition of provisional safeguard duty. The interim measures are imperative in view of the steep deterioration in performance of the domestic industry and the threat of market disruption as a result of increased imports of the product under consideration. The domestic industry has been forced to undertake production cuts. Domestic sales of the domestic industry have declined significantly. The capacity utilization of the domestic industry has steeply declined in the most recent period in view of decline in sales caused by surge in imports. Inventories with the domestic industry are rising significantly. Further, the domestic industry is facing financial losses from carbon black operations.

32. In the light of the critical circumstances, the applicant submitted that any delay in the application of safeguard measures would cause grave damage to the domestic industry. It is requested to the Authority to take immediate necessary actions in the form of provisional safeguard duty to prevent the domestic industry from suffering irreparable damage.

(C) Views of Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA)

33. Increase in imports in September and October 2011 does not signify a trend: the imports have remained constant throughout the injury period. The imports of September and October 2011, the trend is too recent to undertake any meaningful analysis.

34. No case of irreparable damage is made out by the domestic industry which negated the claim of critical circumstances

35. Imports in Sept 2011 and Oct 2011 an aberration.

36. Factors other than increased imports causing injury

- In FY 2010-11, carbon black facilities in the EU stopped production so DI started selling more in the EU. Imports from Russia fell (diverted to the EU). Imports from Australia stopped (sole manufacturing plant closed).
- In FY 2010-11, automobile industry growing at a fast pace, but in FY 2011-12, growth trend reversed, but contracts already entered into could not be rejected and so most were taken delivery of in Sept-Oct 2011.
- Since 2008-09, Indian CB producers have had capacity greater than domestic demand to cater to the export market. PBCL and Hi Tech are export centric companies.
- Significant export sales realization.
- With domestic industry's focus on export market and the projected growth of demand in 2011-12, the user industry needed to secure the supply of Carbon Black and therefore placed order in 2010-11 for 2011-12.
- Tyre companies are witnessing negative profits and therefore the demand of Carbon Black has also witnessed slowdown. Request the Director General (Safeguards) to analyze the imports from Nov 2011-Mar 2012 to determine whether there is continued increase in imports as alleged by domestic industry.

37. No market disruption

- USITC: continuous expansion in DI's capacity negates claim of material injury.
- Increase in installed capacity, production and capacity utilization.

- c. Production has increased quarter wise as well.
- d. Sales increased both in volume and value terms. There is a decline in sales in the most recent period due to increase in sales of other Indian producers.
- e. No price suppression /depression. Rise in CIF prices and also the domestic selling price also increased.
- f. Prices at which the tyre companies have procured Carbon Black in India is much higher than what is provided by the domestic industry in its petition.
- g. There is increase in profits as per the annual reports of the petitioner companies. PBIT has taken a hit in light of increase in depreciation and interest cost.
- h. Petitioner itself stated before DGAD that the reason for increase in imports from April-Oct 2011 was inadequate AD duty. Present investigation could result in double protection.
- i. Non attribution analysis in view of the change in the trend of demand.

38. There is no threat of market disruption as there is no case of continued imports and hence no case of threat of material injury is established.

39. Imposition of safeguard duty would not be in public interest as largest consumer of Carbon Black i.e. tyre industries is already facing Anti-dumping duty and safeguard duty on various inputs.

40. Import data includes Carbon Black of non rubber applications as well.

41. Variance in data of total demand of Carbon Black as provided in initiation notification and domestic industry's petition.

(D) Views of M/s Jiangxin Black Cat Carbon Inc. Ltd.

42. Import data is highly deficient and does not establish sudden increase in imports

- a. Modification/ refining, if any, of raw import data by the petitioner, not disclosed. Respondent requests Authority to provide raw import statistics, methodology, etc.
- b. Import statistics relied upon includes products other than subject goods (non-rubber application carbon black included, import statement would naturally show an increase)
- c. Data presented before DGSGD is completely different from the data presented before AD Authority (shown significantly higher imports only before DGSGD)
- d. Other data compilation errors (misplaced decimal points and additional zeroes; items repeated)

43. Discrepancies between injury information and Annexure submitted by petitioners.

44. Safeguard duty and AD duty cannot be simultaneously imposed in this case

45. 'Market disruption' claim is erroneous for reasons as under:

- a) No fall in production of petitioners in 2011-12; also quarter-wise (Q3 figures not analyzed since just one month available).
- b) The injury if any is only due to imports by the petitioner (a related company of Hi-Tech Carbon, i.e., Birla Carbon has been exporting to India in substantial quantities; therefore, fall in production of Hi-Tech Carbon, if any, is due to shift from production in India to importing).
- c) The fall in sales volume and capacity utilization does not indicate a 'market disruption' to the DI (fall in sales and capacity utilization of DI too small to be considered 'market disruption'; also, not caused by subject imports).

46 Injury, if any, covered by AD duty AD duty has been imposed based on injury margin Since then, even taking into account the increase in cost the NIP increased by 12%, the injury margin is covered by the AD duties imposed; since landed value has also increased (by 18%)

47. No causal link

- Fall in profits during earlier period also There were increased imports only during FY 2011-12 but profitability fell at a higher pace even before
- Quarter on quarter analysis also does not show any injury to DI- when the imports were increasing, the selling price of the domestic industry also increased

48 Investigation in violation of the Competition Act, 2002

- 2 producers (Hi-Tech Carbon and Philips Carbon Black Ltd.) which filed the petition hold dominant position in Indian carbon Black market and are abusing the dominant position to drive away competition from China.
- s 21, Competition Act where parties raise issue regarding applicability of Competition Act before a statutory authority, the later is to refer the case to Competition Commission before proceeding with the investigation

49 Responses of DI to DI questionnaire have not been made available to respondent If no responses filed, petition is incomplete and no investigation can be conducted

50 Imports for many countries have increased Therefore, safeguard duty under the Protocol cannot be imposed

(E) Views of Government of China

51 In FY 2010-11, carbon black facilities in the EU stopped production so DI started selling more in the EU Imports from Russia fell (diverted to the EU) Imports from Australia stopped (sole manufacturing plant closed)

52 There is no adverse price impact of imports from China against Carbon Black made in India

53 Limited supply of Carbon Black from China to India in future will not result in threat of market disruption in view of Carbon Black in China is mainly consumed in domestic market, exports only account for 7% of total production in China, other major export markets, limited capacity in China

54 No injury to the domestic industry as compared to the year 2008-09

55 No causal link due to demand supply gap in India, increasing export of domestic industry, lower GDP growth, high interest cost and currency depreciation

(F) China Chamber of Commerce of Metals, Minerals & Chemicals Importers & Exporters and China Rubber Industry Association

56 No request has been received from above two parties for including them as interested parties in the present investigation Although they have filed their submissions on 15/02/2012, no request for any time extension has been received from them in the matter However their views in brief are as under

- Imports of Carbon Black from China PR is not an established trend of increased imports and is indicative of an abnormal surge isolated to a single period particularly in sep 11
- Abnormal increased in imports in month of September 2011 owing to advance quantity supply contracts made by the importers and user industry which resultantly led to an incidental increase in the month of September 2011
- Volume of product under consideration imported from China was an unusual export to meet the temporary demand of Indian industry

- d. There is no price undercutting, depression or suppression on the domestic products
- e. There is no threat of market disruption in view of Chinese producers giving priority to their domestic demand, other major export markets, limited production capacity due to environment protection
- f. Positive trends of the domestic industry In comparison to 2008-09, most economic parameters showed a positive trend in the year 2009-10.

(G) Findings of the Director General (Safeguards) :

57. I have carefully gone through the case records, the replies filed by the domestic producers, exporters and exporting nation. Submissions made by the various parties and the issues arising there-from are dealt with at appropriate places in the findings below

58. Petitioners requested for imposition of provisional safeguard duty in view of the steep deterioration in performance of the domestic industry and the threat of market disruption as a result of increased imports of the product under consideration. The domestic industry has been forced to undertake production cuts Domestic sales of the domestic industry have declined significantly. The capacity utilization of the domestic industry has steeply declined in the most recent period in view of decline in sales caused by surge in imports Inventories with the domestic industry are rising significantly. Further, the domestic industry is facing financial losses from carbon black operations

59. The Rule 9 of Customs Tariff (Transitional Product Specific Safeguard Duty)Rules, 2002 notified vide Notification No 34/2002-NT-Customs dated 11.06.2002 prescribes that the Director General shall proceed expeditiously with the conduct of the investigation and in critical circumstances, he/she may record a preliminary finding regarding "market disruption" or "threat of market disruption". The principles governing investigations have been provided in the Rule 6 of the Customs Tariff (Transitional Product Specific Safeguard Duty)Rules, 2002. The harmonious reading of Rules 6, 9 of the said Rules leads to a conclusion that the Rules provide for expeditious recommendation of provisional Safeguard duty based on preliminary findings. The Rule 15 of the said Rules provide for refund of differential Safeguard duty in case safeguard duty imposed after conclusions of the investigations is lower than the provisional duty already imposed and collected. In the facts and circumstances of the present case, it is considered that the interim measures are imperative in view of the steep deterioration in performance of the domestic industry as a result of increased imports of the product under consideration from China PR. As this case has been initiated and provisional findings are being issued in view of critical circumstances, this interim measure is in full conformity to the domestic law as well as Article 16.7 of the China's Accession Protocol

(I) The product under investigation

60. The product involved is 'Carbon Black', classified under Customs subheading No 28030010 under the Customs Tariff Act, 1975. Carbon Black is also known as acetylene black, channel black, furnace black, lamp black, thermal black, and noir de carbone. Carbon black can be divided into two categories – rubber and non-rubber applications. Carbon black for rubber applications is used in production/ processing of rubber (including tyres), as a reinforcing filler. The present petition is in respect of increased imports of Carbon black used in rubber applications. Carbon black used in non-rubber applications, such as inks in copiers and computer printer cartridges, paints, crayons and polishes is not within the scope of the present investigation.

(II) Domestic Industry

61. Section 8C(7)(a) of the Customs Tariff Act 1975 defines domestic industry as follows:

(a) "Domestic industry means producers -

- I "as a whole of the like article or a directly competitive article in India, or
- II "whose collective output of the like article or a directly competitive article in India constitutes a major share of the total production of the said article in India"

62 The application has been filed by M/s Association of Carbon Black Manufactures, 5A Raba Kailash, 55/4 Ballygunge Circular Rd Kolkata-700019 on behalf of two of its member companies M/s. Phillips Carbon Black Limited, 31, Netaji Subhash Road, Kolkata-70001, and M/s Hi-Tech Carbon Murdhwa Indl Area, P.O. Renukoot, Dist. Sonebhadra (U.P.) There are four more known producers of Carbon Black in India namely Continental Carbon India Limited, A-14 Industrial Area No 1 South Side of GT Road Ghaziabad-201 001, Ralson Carbon Black Ltd Jitwal Kalan Tehsil Malerkotla Distt Sangrur Punjab, Cahot India Limited MIDC Plot No 3 Trans -Thane Creek area Thane Belapur Road Post Ghansoli Thane 400701 Maharashtra, Himadri Chemicals & Industries Limited Registered Office Fortuna Tower 23-A, Netaji Subhas Road 8th Floor, Kolkata 700 001 but they are not the petitioners in the present case The applicants account for more than 80% of the Indian production and hence are major producers

63. After taking into account the information on record, it is determined that production of the domestic producers filing the petition and who have provided relevant information constitutes a major share of the total production of the "said article in India. Accordingly, they are Domestic Producers as per Section 8C(7)(a) of the Customs Tariff Act 1975

(III) Period of Investigation (POI):

64 This is a fresh case based on the recent market disruption or threat of market disruption being faced by the domestic industry. The POI has been taken from 2008-09 onwards till Q3 (October) of 2011-12 and the domestic data has been verified to the extent possible from the available records of the Domestic Industry till October,2011 by on site visit by the officers of the Directorate

(IV) Source of Information:

65 The import data for the instant POI has been taken from IBIS submitted by the petitioners. The analysis for increasing imports has been carried out for the relevant POI of Carbon Black for Rubber applications

The injury data for the relevant POI submitted by the domestic industry in their petition has also been relied upon, which has been duly verified by on site visit by the department to the extent deemed necessary and the verified data has been taken into consideration for injury analysis. The cost data and calculations of injury margin have been provided by the petitioner duly certified by independent Chartered Accountant.

It is noted that none of the opposing interested parties, the Chinese producers, ATMA, consumers or other interested parties have provided any information with regard to gross imports of carbon black in to India. ATMA has also not provided any information on imports of carbon black by its various members.

(V) Confidentiality of Information submitted

66 The domestic industry has provided some information on confidential basis and sought confidentiality on the information /data submitted. The domestic industry provided non confidential version of the application for safeguard measure as per the provisions of Safeguard Rules 2002 and Trade Notice No SG/TN/1/97 dt 06 09 1997. Further the domestic industry has submitted reasons for seeking confidentiality at the time of filing the application.

67 The other interested parties have also requested for confidentiality of information and have submitted the confidential and non confidential version of all submissions. However they objected to the excessive confidentiality claimed by the domestic industry and

argued that meaningful argument can be put forward only with actual data on economic parameters and hence the same should not be granted.

68. Rule 7 of the Safeguards Rules,2002 and Art. 3.2 of WTO also provide for confidentiality. The petitioner is not required to disclose such information which is confidential information of the company, disclosure of which can cause serious prejudice to the business interests of the company; which is not in public domain and which the petitioner has not disclosed before public at large in the past. Accordingly confidentiality, as prayed for by the domestic industry, is granted.

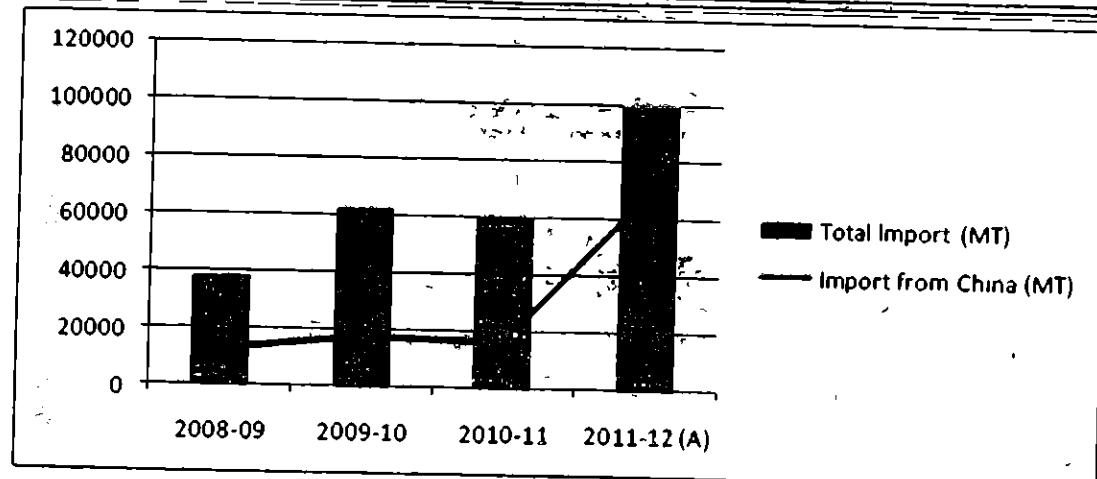
(VI) Increased Imports

69. Imports of Carbon Black from People's Republic of China into India have shown sharp increase in absolute terms as well as in relative terms. It is also noticed that the rate of increase in imports from People's Republic of China is significantly higher than that from countries other than People's Republic of China, causing market disruption and threat of market disruption. The data relating to imports of Carbon Black from 2008-09 onwards till October,2011 is as under

(VII) Increase in Imports from China in absolute terms:

70. The Imports of the product under consideration have increased throughout the injury period in absolute terms. There is a sudden, sharp and significant increase in imports in the recent period. The Imports from China increased from 12971 MT in 2008-09 to 69960 MT in 2011-12 (on annualized basis) which is an increase of 539%. There is a sudden surge in imports in 2011-12 (Annualised) over 2010-11 from China by 318% though increase in total import is only 65%.

Financial Year	Quarter	Import from China (MT)	Total Import (MT)	% of Import from China
2008-09		12971	39187	33
2009-10		17722	63244	28
2010-11		16724	61185	27
2011-12	Q1	5789	14828	39
	Q2	25686	32465	79
	OCT,11	9335	11489	81
	Q3 (A)	28005	34467	81
2011-12 (A)		69960	100769	69



The slight dip in import in 2010-11 from 2009-10 level is due to imposition of anti dumping duty vide ntnr no. 83/2009-Customs, dated 30th July, 2009 (Prov.) and vide ntnr no. 06/2010 customs, dated 28th January, 2010 (final) on the subject goods.

It is seen from the data above that imports of carbon black from China are increasing rapidly in absolute terms. The overall imports of carbon black from China has nearly doubled in first half of 2011-12 in comparison with the total quantity of 16724 MT imported in 2010-11.

(a) Increase in imports in relation to production

71 The imports of Chinese Carbon Black in India have also increased rapidly in relation to Indian production. The Production of DI has declined in absolute terms in the recent period (2011-12) in view of the increased import from China PR. It is seen that imports of carbon black from China remained at a low level (between 3-4%) during 2008-09 and 2010-11. However, the imports have increased so rapidly thereafter in 2011-12 that the imports in relation to production constitute 11% of Indian production.

Financial Year	Quarter	Import from China (MT)	Production (MT)	% of China Import In relation to domestic production
2008-09		12971	416244	3
2009-10		17722	492863	4
2010-11		16724	585899	3
2011-12	Q1	5789	163458	4
	Q2	25686	148188	17
	OCT,11	9335	46582	20
	Q3(A)	28005	139746	
2011-12 (Annualised)		69960	614105	11

(b) Imports in relation to Consumption/Demand

72 The imports of Chinese Carbon Black in India have increased rapidly in relation to Indian consumption of carbon black. It is seen that imports of carbon black from China remained at a low level (3%) during 2008-09 and 2010-11. However, the imports have increased significantly thereafter in 2011-12 to such an extent that the imports in relation to consumption constituted 11% of Indian consumption.

Financial Year	Quarter	Import from China (MT)	Total Demand/ Consumption (MT)	% of China Import in relation to domestic consumption
2008-09		12971	460048	3
2009-10		17722	582930	3
2010-11		16724	614152	3
2011-12	Q1	5789	160228	4
	Q2	25686	164671	16
	OCT,11	9335		
	Q3	28005	149793	19
2011-12 (Annualised)		69960	632923	11

73. In view of the above, it is observed that imports of Carbon Black from China PR have increased in absolute and relative terms and that the increase in imports is recent enough, sudden enough, sharp enough and significant enough to constitute "increased imports" within the meaning of Section 8C of the Act

(VIII) Unforeseen development

74. The Appellate Body in Argentina — Footwear (EC case) held that the phrase Unforeseen Developments means the developments which were unexpected 'Unforeseen developments' requires that the developments which led to a product being imported in such increased quantities and under such conditions as to cause or threaten to cause serious injury to domestic producers must have been 'unexpected'. The Body in the same case noted a GATT panel report which held that the development must have been unforeseen at the time of tariff negotiation. The Appellate Body in Korea-Dairy case held that unforeseen developments are developments not foreseen or expected when member incurred that obligation

75. The Appellate Body, in Argentina — Footwear (EC), then held that the requirement of "unforeseen developments" did not establish a separate "condition" for the imposition of safeguard measures, but described a certain set of "circumstances"

76. The panel on US- Steel Safeguards¹ concluded that the confluence of several events can unite to form the basis of an unforeseen development:

"The United States argues that the robustness of the US dollar was a development which combined with the other developments, namely, the currency crises in Asia and the former USSR and the continued growth in steel demand in the United States' market as other markets declined lead to increased imports."

77. The petitioner has pointed out low price of raw material in China vis-a-vis raw material used by other countries including the Dk and its growing gap to be the unforeseen development. It is observed that domestic industry uses CBFS (carbon black feed stock) as a raw material for manufacturing Carbon Black whereas Chinese producers use CBO (carbon black oil). There is a significant price difference between the raw materials. The price difference between the two raw materials provides cost advantage to the Chinese producers which lead to low prices of Chinese Carbon Black

78 In Carbon Black industry, the raw material cost is the major cost incurred by the producers of Carbon Black. Hence raw material prices play a major role in deciding the price trend of Carbon Black. After analyzing the price trend it would be seen that throughout the injury period, there has been a price difference between CBO and CBFS and from the month of June '11 the prices of CBO have started to decline and at the same time the price of CBFO started increasing which can be seen from below

Months	CBO FOB Price	CBFS CIF Price	Carbon black Import Price with ADD (Rs. Per MT)						Selling price Domestic Industry (Indexed)
	Rs./MT	Rs./MT	china	Australia	Korea (No ADD)	Thailand	Russia		
11-Apr	26,044	29,457	56,012	67,492	60,766	61,781	56,683		100
11-May	25,814	27,878	59,410	65,813	60,596	60,611	59,540		102
11-Jun	24,621	29,136	60,144	66,448	79,838	65,184	57,238		101
11-Jul	22,993	29,342	61,890	74,700	74,197	64,787	58,117		104
11-Aug	23,264	27,198	60,676	77,415	72,906	65,390	-----		107
11-Sep	23,459	28,313	62,010	80,508	73,244	81,266	60,507		107
11-Oct	24,278	30,547	65,646	85,015	78,138	84,048	67,362		108

79 Resultantly, domestic industry has increased its prices but at the same time China also increased its prices. But in spite of such increase, the price quoted by China is far lower than domestic industry prices and third countries prices. The price of Carbon Black from other major supplier countries who also use CBFS as raw material, i.e. Russia, Korea, Australia and Thailand, started increasing during the same period i.e. from June '11 onwards and were comparable to the prices quoted by the domestic industry. It is noted that this was the period when the imports from China has entered India at significant levels capturing the Indian market by offering lower prices.

80 The price difference in the raw material for the most recent period Apr '11 to Oct '11 has resulted in cheap Chinese imports of Carbon Black capturing the Indian market causing irreparable damage to the Indian Market.

Particulars	Apr-11	Oct-11	% Increase
CBFS	29457	30547	3.70
DI Selling Price	***	***	7.60
CBO	26,044	24278	(6.78)
China CIF	51989	61232	17.78

81 It is seen that when the prices of CBFS increased by 3.70%, the domestic industry selling price increased by 7.60% in Oct '11 as compared to April '11. However the price of CBO declined by 6.78% in Oct '11 as compared to Apr '11 but China has increased its prices by 17.78%. Thus, even after a cost advantage of about 25% (18% + 7%), the DI prices is about 15% higher than the import price with ADD from China. It clearly shows that in spite of decline in raw material prices, China was able to increase its prices and yet are selling at price much lower than the other counterparts as the Chinese producers of Carbon Black are benefitted due to the raw material differences.

82 The price difference in the raw material can be seen as under

	China CBO FOB US\$/MT	CBFS CIF India US\$/MT	Gap between CBFS CIF India and China CBO US\$/MT
Jan-11	540	523	(17)
Feb-11	548	575	27
Mar-11	568	617	50
Apr-11	576	652	75
May-11	574	620	46
Jun-11	539	638	99
Jul-11	505	645	140
Aug-11	520	608	88
Sep-11	504	608	104
Oct-11	489	616	126

83. Thus, it is seen that the difference in raw material prices has increased from minus USD 17 to USD 126 which has enabled lower price of the finished Carbon Black in China than that of the DI causing market disruption in the recent period leading to increase in low priced import from China and continues to threaten market disruption for domestic industry which, if not checked immediately, would be difficult to repair.

84. The Chinese producers have created significant production capacities and are therefore looking for market opportunities. Also as per the information provided by the domestic industry, the Chinese Carbon Black market is expanding on year to year basis thereby increasing their export volumes. The capacity of Carbon Black with China has exceeded 5 million ton per annum and the output is 3.4 million tones. Considering the huge production capacities of the subject goods in subject country lying idle and their export orientation and the increasing demand for the subject goods in India, in all likelihood imports will continue to remain high in 2011-12 & thereafter as compared to 2008-09 and 2010-11.

(IX) Market disruption and Threat of Market disruption

85. Statutory framework: "market disruption" shall be caused whenever imports of a like article or a directly competitive article produced by the domestic industry, increase rapidly, either absolutely or relatively, so as to be a significant cause of material injury, or threat of material injury, to the domestic industry,², and "threat of market disruption"³ means a clear and imminent danger of market disruption.

86. It is seen that the Annexure to Rule 8 of the Custom Tariff Act (Transitional Product Specific Safeguard Duty) Rules, 2002 technically requires that certain listed factors as well as other relevant factors must be evaluated to determine market disruption or threat of market disruption. Any such evaluation will be different for different industries in different cases, depending on the facts of the particular case and the situation of the industry concerned. An evaluation of each listed factor will not necessarily have to show that each such factor is "declining". In one case, for example there may be significant decline in sales, employment and productivity which may show "material injury" to the domestic industry, and therefore may justify a finding of market disruption. In another case a certain factor may not be declining, but the overall picture may nevertheless demonstrate "material injury" to the domestic industry. Thus, in addition to a

² Section 8C(7)(b) of the Customs Tariff Act, 1975

³ Section 8C(7)(c) of the Customs Tariff Act, 1975

technical examination of all the listed factors and any other relevant factors, it is essential that the overall *position* of the domestic industry is evaluated, in light of all the relevant factors having a bearing on the situation of that industry.⁴

87 Accordingly, in analyzing market disruption or threat of market disruption all factors, which are mentioned in the rules as well as other factors which are relevant for determination of market disruption or threat of market disruption, have been considered. No single factor has been considered as dispositive. All relevant factors within the context of the relevant business cycle and conditions of competition which are relevant to the affected industry have been considered. The determination of market disruption or threat of market disruption is based on evaluation of the overall position of the domestic industry, in light of all the relevant factors having a bearing on the situation of that industry.

(X) Market disruption:

88. It is observed that the increased imports of Carbon Black from China PR have caused and are threatening to cause market disruption to the domestic producers of Carbon Black as indicated by the following factors:

a. **Market share:** the market share of the domestic industry increased upto Q1 of 2011-12 but thereafter declined significantly. The market share of domestic industry declined from 74% in Q1 of 2011-12 to 57% in Q3 of 2011-12. This was the period when the imports entered the Indian market at significant rate capturing the Indian market. The market share of the subject imports from China increased from 3% in 2008-09 to 11% in 2011-12 (on annualized basis). This sharp growth is accounted for by decline in market share of both DI and import from countries other than China.

Financial Year	Quarter	Total Import	Import from China (MT)	Sales of DI (MT)	Sales of other Indian Producers	Total Demand (MT)	% of Market Share		
							DI	China Import	Other Countries
2008-09		39187	12971	322809	98052	460048	70	3	6
2009-10		63244	17722	400295	119391	582930	69	3	8
2010-11		61185	16724	443430	109537	514152	72	3	7
2011-12	Q1	14828	5789	119327	26073	160228	74	4	6
	Q2	32465	25686	99206	33000	164671	60	16	4
	OCT,11	11489	9335	28225	10217	49931			
	Q3	34467	28005	84675	30651	149793	57	19	4
2011-12 (Annualised)		100769	69960	423014	119632	632923	67	11	5

⁴ Based on Para 139 of Argentina footwear Case Appellate Body Report Of WTO

b. Production: - The production has been determined on the basis of production reported by the domestic industry in its excise records. It is seen that the domestic production increased up to FY 2010-11, but declined drastically in the most recent period. The domestic production has fallen steadily from 163458 MT in Q1 (2011-12), to 148188 MT in Quarter 2(2011-12) & further to 139746 MT in Q3 (2011-12) i.e. by 14.5%. The domestic industry has submitted that the production process of carbon black is such that the domestic industry should attempt to produce more and more of the product in order to achieve not only economies of scale but also to arrest fixed cost associated with the plant and production. As there is demand for the product therefore the DI had increased their capacity over the injury period. However, so rapid is the increase in the imports that despite these extra efforts by the domestic industry, the inventories levels with the domestic industry were rising to such an extent that the domestic industry were eventually forced to take **production suspension**. Increasing production with high capacity means inventory position will worsen further. The domestic industry contended that the increased imports of carbon black are leading to production suspension in the most recent period by the domestic industry. The verification at the premises of the domestic industry showed that the domestic industry constituents had taken production shut down in order to arrest the rising inventories.

Financial Year	Quarter	Production (MT)	Inventory(MT)	Installed Capacity
2008-09		416244	3912	500000
2009-10		492863	7594	552500
2010-11		585899	8678	667000
2011-12	Q1	163458	7902	181002
	Q2	148188	11600	181002
	OCT,11	46582	17249	60334
	Q3	139746		181002
2011-12 (Annualised)		614105		724008

c. Sales: The sale has been determined on the basis of goods cleared by the domestic industry, as reported in their excise records.

Financial Year	Quarter	Production (MT)	Sales of DI (MT)	Sales of other Indian Producers	Total Demand (MT)	EXPORT(MT) by DI
2008-09		416244	322809	98052	460048	94395
2009-10		492863	400295	119391	582930	89021
2010-11		585899	443430	109537	614152	141383
2011-12	Q1	163458	119327	26073	160228	26434
	Q2	148188	99206	33000	164671	29489
	OCT,11	46582	28225	10217	49931	8576
	Q3	139746	84675	30651	149793	25728
2011-12 (Annualised)		614105	423014	119632	632923	110570

d.It is seen (table above) that the sales of the domestic industry has increased up to FY 2010-11, it declined in the most recent period from 443430 MT in 2010-11 to 423.014 MT(annualized) in 2011-12. So far as most recent period is concerned, sales declined in absolute terms from 119327 MT in Q1 of 2011-12 to 84675 MT in Q3 of 2011-12. This decline in sales is despite the fact that the demand increased on annualized basis.

Period		Sales of DI (MT)	Total Demand (MT)	Sales as % of Demand
2008-09		322809	460048	71
2009-10		400295	582930	69
2010-11		443430	614152	73
2011-12	Q1	119327	160228	75
	Q2	99206	164671	61
	OCT,11	28225	49931	57
	Q3 (A)	84675	149793	
2011-12 (Annualised)		423014	632923	67

(i) However, it is noticed that in absolute term, sales of the DI as percentage to total demand of the product has declined throughout the POI (except in 2010-11 when ADD was imposed) i.e. from 71% to 67%. In the most recent period also, this decline is sharp, from 75% to 57%. This clearly shows that the domestic industry suffered loss in sales in absolute as well as in relation to demand.

(ii) The domestic industry contended that the rising imports of carbon black have prevented the domestic industry from selling its production in the domestic market. The domestic industry contended that so significant was the increase in imports that the same has lead to decline in domestic sales of the domestic industry. This decline in domestic sales is despite the increase in demand. Domestic industry is being forced to export its production, despite significant domestic demand. However, so rapid is the increase in the imports that the domestic industry was forced to look for market opportunities outside India in order to dispose off the production, which could not be sold in the domestic market. Such exports are not a matter of choice, but a compulsion for the domestic industry, driven out of continuous increased imports of the product in the Country.

(iii) The domestic industry further contended that there is a significant price difference between the domestic and imported product. The domestic industry further contended that even though the product is attracting anti-dumping duties, the surge in import volume is unabated. However, so significantly low the import prices are that even after adding the Anti-dumping duties in respect of some of the Chinese companies, the landed price of imports are below selling price of the domestic industry. This significant price difference between domestic and imported product has led to increased sourcing by the consumers from Chinese producers. Resultantly, the sales of the domestic industry declined. Also the demand of the product increased by almost 19000 MT in 2011-12(A) from 2010-11 whereas the imports have increased by approx 40000 MT. This clearly shows that increase in imports is far more than increase in domestic demand of product under consideration in India, consequently the imports have captured significant market share of the Indian producers affecting sales of DI in the process causing market disruption.

e. Capacity utilization: The domestic industry has added capacity over the period. The domestic industry contended that the addition to capacity is in view of present and potential demand of the product in the market. It is noted that the domestic industry added capacity upto Q1 2011-12 and despite these additions in capacities, the domestic industry was able to achieve 90% capacity utilization in Q1 2011-12. However, capacity utilization fell sharply thereafter in Q2 and further in Q3 to 82% and 77% respectively. The capacity utilization of domestic industry in Q3 2011-12 is at the lowest level. The expansion in capacity in 2011-12 (A) was 9% over 2010-11 but the capacity utilization declined by 6% during the same period due to increase in market share of imports.

Financial Year	Quarter	Production (MT)	Installed Capacity	Capacity Utilisation (%)
2008-09		416244	500000	83
2009-10		492863	552500	89
2010-11		585899	667000	88
2011-12	Q1	163458	181002	90
	Q2	148188	181002	82
	OCT,11	46582	60334	77
	Q3	139746	181002	77
2011-12 (Annualised)		601856	724008	83

f. Inventory: The level of inventories was considered as per excise records maintained by the domestic industry. It would be seen that as the market share of the domestic industry is declining, that of imports is increasing. The domestic industry was unable to increase its sales volume and had to face the problems of accumulated inventories. The levels of inventories have increased significantly throughout the injury period. The table below depicts the inventory levels which have witnessed a massive surge from 3912 MT in 2008-09 to 17249 MT in October, 2011 (Q3 of 2011-12), almost four times in 2011-12 from the 2008-09 level, reflecting the plight of the domestic industry. The domestic industry contended that faced with rising imports, they made efforts to undertake additional exports in order to curtail the level of inventories and to maintain production to the extent feasible. However, increase in Chinese imports is so rapid that despite declining production, the domestic industry is faced with rising inventories.

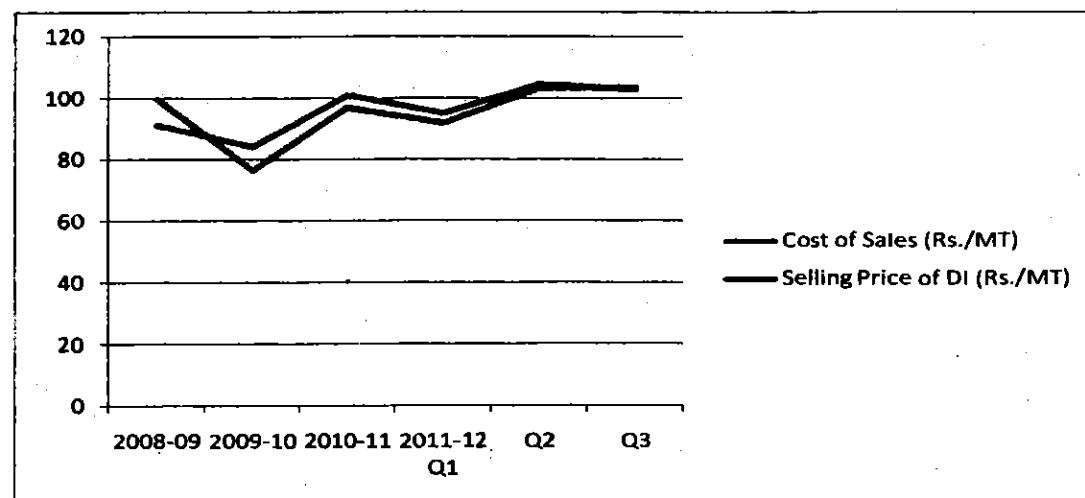
Financial Year	Quarter	Production (MT)	Sales of DI (MT)	Inventory(MT)
2008-09		416244	322809	3912
2009-10		492863	400295	7594
2010-11		585899	443430	8678
2011-12	Q1	163458	119327	7902
	Q2	148188	99206	11600
	OCT,11	46582	28225	17249
	Q3	139746	84675	
2011-12 (Annualised)		614105	423014	

g. Employment and Productivity: There is no significant change in the level of employment but both employment and productivity has gone down during the most recent period as can be seen from below:

Financial Year	Quarter	Production (MT)	Productivity (MT per day)	
			Employment(Nos)	Productivity (MT per day)
2008-09		416244	1057	1140
2009-10		492863	1133	1350
2010-11		585899	1280	1605
2011-12	Q1	163458	1290	1816
	Q2	148188	1257	1647
	OCT,11	46582	1175	1553
	Q3	139746	1175	1553

h. Profit/loss: The domestic industry has reported profit before tax, duly certified by a practicing Cost Accountant. Further, the profit reported by the domestic industry is considered in respect of product under consideration relating to its domestic operations only. It is noted that the domestic industry has significant export activities in relation to the product under consideration. Profit earned by the domestic industry in the exports operations have been segregated and has not been considered for the purpose of analyzing impact of increased imports on the profits earned by the domestic industry. Further, it is noted that the constituents of domestic industry are having significant other operations as well. The profit earned by the domestic industry has however considered in relation to carbon black for rubber applications relating to domestic market only. It is seen that profitability of the domestic industry has steeply declined in the most recent period. The profitability improved in 2009-10 but thereafter started declining significantly.

Financial Year	Quarter	Cost of sales (Indexed)	Selling price (indexed)	Profitability (indexed)
		Rs/MT	Rs/MT	(Rs./MT)
2008-09		100.0	91.7	-8.3
2009-10		76.7	84.6	7.9
2010-11		97.3	101.5	4.2
2011-12	Q1	92.2	95.6	3.4
	Q2	103.5	105.1	1.5
	Q3	103.8	103.4	-0.3



It is seen that DI suffered loss in 2008-09 and as contended by them these financial losses are on account of dumping of the product. It is noted that Directorate General of Antidumping and Allied Duties had earlier conducted anti-dumping investigations in relation to carbon black, wherein the Designated Authority has considered October 2007 to September 2008 as the investigation period. It is, thus, concluded that the financial losses suffered in 2008-09 were in view of the injury caused due to decline in demand and dumping of the product.

- i. Some of the interested parties argued that there is increase in profits as per the annual reports of the petitioner companies. It is however noticed that the annual report performance is not exclusively in respect of product under consideration for domestic operations.

XI Threat of market disruption

89. The imports are entering the Indian market at huge quantities in absolute terms as well as in relation to production and consumption in India. Positive price undercutting indicates the likely adverse price effect of increased imports on Domestic Industry. It may be seen from the import data that the imports from China PR are largely of the subject goods. Considering the net selling price of the domestic industry for the good, the price undercutting from China PR is significantly positive and is likely to remain positive. The difference between import price and domestic selling price is too high making the imports lucrative and posing continued threat of increased import.

90. The threat of serious market disruption is established by the following factors:-

- (a) The price difference between domestic and imported product is too high even after considering the prevailing anti dumping duties. Thus, the imports will continue to remain lucrative;
- (b) The Chinese producers are holding significant unutilized capacities. Resultantly, they are looking for additional markets to the extent possible;
- (c) The increasing gap in the price of raw materials i.e. CBFS and CBO is providing significant mileage to the Chinese producers. The Chinese producer is therefore likely to intensify its activities in the Indian market;
- (d) As the auto industry is witnessing growth and the demand of the PUI is also growing, the Indian market is lucrative and thus threat of market disruption is clearly imminent.

91. The domestic industry is losing sales opportunities. Consequently, production, capacity utilization, profits, return on investment and cash flow is not improving even after imposition of anti dumping duties due to continued presence of low price increased imports. Given the low prices offered by the Chinese producers and significant freely disposable production capacities with them, the imports are surging further despite low prices offered by the domestic industry. Increased imports have led to increase in market share of imports and reduction in market share of the domestic industry causing serious market disruption and threatening to cause further damage.

XII Other Factors of Injury:

92. Followings are relevant in this regard –

- a) Possible decline in demand of the product: There is no contraction in demand of Carbon Black in India. Demand of the product in India has shown significant increase over the years.
- b) Changes in the patterns of consumption: The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Changes in the pattern of consumption could not have contributed to the injury to the domestic industry.
- c) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers: There is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.
- d) Developments in technology: Technology for production of the product has not undergone any change. Developments in technology are, therefore, not a factor of injury.
- e) Export performance: The claimed injury to the domestic industry is on account of domestic operations. Petitioners have provided costing and injury information for domestic operation. Claimed injury to domestic industry cannot be attributed to exports.

Period	Landed price of imports with ADD from China (Indexed)	Net Selling Price (DI) Indexed	Export Price (Indexed)
	Rs. per MT	Rs. per MT	Rs. per MT
2008-09	100	115	92
2009-10	98	106	80
2010-11	112	120	92
2011-12 (till Oct)	126	143	121

The data in table above shows that the export price of DI is always less than the Domestic selling price. The domestic industry has to export the goods despite of sound domestic demand at the price much higher than the export price. In view of this the export is not profitable option for the DI. The DI has to export to minimize losses. Hence it can not be said that the export is priority for DI. Further no evidence has been brought on record to show that DI has refused domestic supply to the User industry in India and have instead resorted to exporting. The fact that domestic industry has to export at price less than domestic sale price shows that the increase in import is not due to demand supply gap.

XIII Causal Link between Increased Import and Market disruption or Threat of Market disruption:

93. The product is largely sold in comparison/competition with imports. The landed price of imports is significantly lower than the selling prices of the domestic industry. Subject imports are available at prices lower than domestic industry. Consequently, the consumers are increasingly switching over to imports, thus forcing the domestic industry to offer sub-optimal prices. The domestic industry is losing sales opportunities. Consequently, production, capacity utilization, profits, return on investment is declining due to continued presence of low price imports. The imports are undercutting the prices of the domestic industry. Consequently, the domestic industry has suffered decline in profits and return on investment. Exports undertaken by the domestic industry are a result of increased imports of carbon black from China. It is thus evident that injury to the domestic industry has been caused by the increased imports.

Import from China (indexed).

	Net Selling Price of DI	CIF value of import	Landed price of imports without ADD	Landed price of imports with ADD	Price undercutting with ADD	Price undercutting without ADD
	Rs. per MT	Rs. per MT	Rs. per MT	Rs. per MT	Rs. per MT	Rs. per MT
2008-09	100.0	81.6	86.6	No ADD	18.4	18.4
2009-10	92.2	74.2	78.9	85.1	13.3	13.3
2010-11	110.6	85.1	90.4	97.2	13.4	20.2
2011-12 (till Oct)	124.3	96.6	102.6	109.4	14.9	21.7

94. The performance of domestic industry shows that despite of increase in demand of Carbon Black over the POI, the market share of DI has decreased and that of import has increased. It is also seen that the price undercutting, both with and without ADD for imports from China has increased. However, the difference between the landed price of import and the domestic selling price is significant and is increasing over the year since 2008-09.

95. It is observed that rise in import volume in recent period is despite decrease in price difference between DI's SP and landed price of import with ADD from China. This has caused grave market disruption and has harmed DI in absolute terms which establishes the causal link between increased import and disruption caused.

XIV Public Interest:

96. Some of the interested parties have argued that imposition of safeguard duty would not be in public interest as largest consumer of Carbon Black i.e tyre industries is already facing Anti-dumping duty and safeguard duty on various inputs. On examination of the competing interests of different economic operators and public at large has been carried out. In this respect, it is important to keep the prime objective of safeguard laws in mind which is to address injury to the domestic industry because of increased imports. It is in the interest of all to keep a healthy and competitive Industry. It is apparent that if the provisional safeguard measures are not taken, both the prices and market share of domestic industries will further reduce resulting in financial loss of domestic Industries to the extent of getting the domestic industry unviable and consequent loss of employment as well as loss of strategic and economic interest to keep the domestic market competitive. The imposition of safeguard duty would allow the domestic industry to remain competitive and, at the same time, users/buyers will have a wider choice to source their material requirements, that too at competitive prices.

97. The Applicants have submitted that the cost of carbon black for the consumers is in the region of 6% (the fact can be established from the annual report of the tyre industry). Further, market share of China in demand for the product in India was in the region of 11% during the period of surge in imports. While the consumers need not import any carbon black from China and the domestic industry has sufficient capacities to meet the present and potential demand of the product in the Country; even if it is argued that the consumer industry should continue to import the product at the same level from China and imposition of safeguard duty shall result in cost to the consumer increasing by 30% in respect of these Chinese imports, it follows that the impact on consumer in any case shall not exceed 0.33%.

98. Considering the above share and the insignificant cost of Carbon Black it is noted that there will be no or very minimal impact (0.19%) of Safeguard duty on price of tyre industry.

99. Further, it is noted that already 3 investigations have been concluded on imposition of Anti-dumping duty on tyres and one is ongoing. Therefore, the tyre industry is well protected under the garb of Anti-dumping duty. It has not been demonstrated by the consumers that the impact of safeguard duty on the consumers will be unbearable. At the same time, the domestic industry has argued that given the market share of China, the impact of proposed safeguard duty on the consumer industry shall be insignificant. The domestic industry has further stated that it shall not increase its prices as a result of imposition of the proposed safeguard duty. As regards the Anti-dumping duty imposed on Carbon Black, it is noted that in spite of Anti-dumping duty being imposed on China, the imports kept on entering the Indian market at a significant volume causing injury to the domestic industry. Therefore it is in public interest to impose safeguard duty on imports of Carbon Black from China PR.

XV Critical Circumstances:

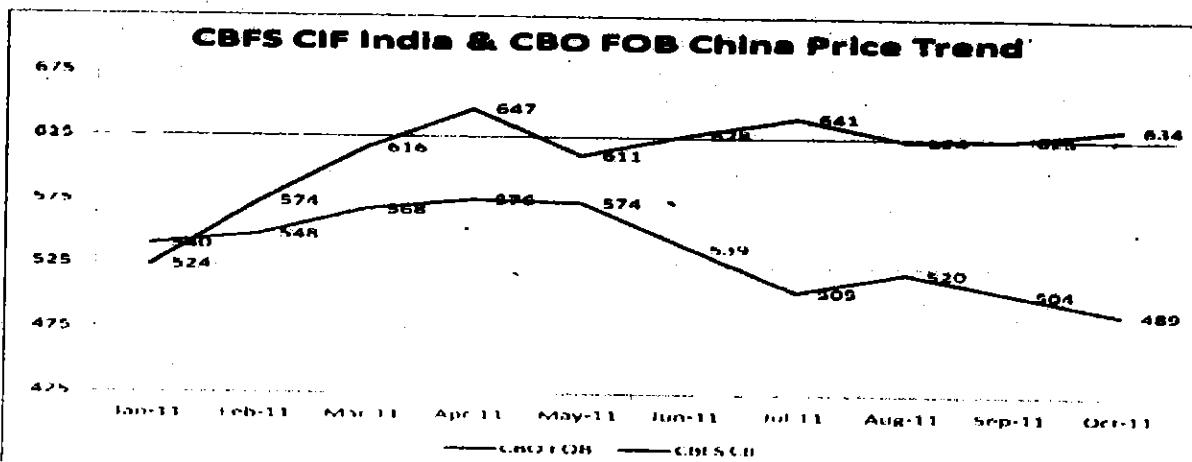
100. "Critical circumstances" means circumstances in which there is clear evidence that imports have taken place in such increased quantities and under such circumstances as to cause or threaten to cause market disruption to the domestic industry and delay in imposition of provisional safeguard duty would cause irreparable damage to the domestic industry⁵

A. The sudden surge in import, performance of the domestic industry and the rising gap in the raw material have been considered in order to determine the existence of critical circumstances. For this purpose, the monthly performance of the domestic industry in the most recent period has been analysed which can be seen from the table below:

	Units	11-Apr	11-May	11-Jun	11-Jul	11-Aug	11-Sep	11-Oct
Production	MT	54767	54150	54542	54751	48127	45311	46582
Capacity utilization	%	91	90	90	91	80	75	77
Sales-Domestic	MT	41003	39150	39173	38337	31757	29112	28225
Closing Stock	MT	8459	7559	7902	10609	11687	11600	17249
Total imports	MT	6470	3886	4471	8879	9084	14507	11489
Imports From China	MT	1,692	1,245	2,849	6,530	6,674	12,482	9,335
Market share of domestic industry	%	73.01	75.69	74.85	65.85	61.26	53.30	56.53
Market share of China	%	3.01	2.41	5.44	11.22	12.87	22.85	18.70

B. The market share of import from China has risen phenomenally in the recent period and this surge in import volume is in spite of ADD on the product. Since the unit price of import has also risen, price is not the factor and the injury is mainly due to import surge. The domestic industry has been forced to undertake production cuts. Domestic sales of the domestic industry have declined significantly. The capacity utilization of the domestic industry has steeply declined in the most recent period in view of decline in sales caused by surge in imports. Inventories with the domestic industry are rising significantly. Further, the domestic industry is facing financial losses from carbon black operations and the profitability is now negative.

C. It is observed that domestic industry uses CBFS as a raw material for manufacturing Carbon Black whereas Chinese producers use CBO. The price difference between the two raw materials provides cost advantage to the Chinese producers which led to low prices of Chinese Carbon Black. This has resulted in cheap Chinese imports of Carbon Black capturing the Indian market causing injury to domestic industry. The price difference in the raw material can be seen from the graph below:



D. The preliminary determination thus shows that excessive surge in import with rising unit price from China in the recent period; poor performance of the DI and rising difference in the price of raw material for manufacturing carbon black has caused market disruption and constitute critical circumstances in the instant case. In view of the above, critical circumstances exist justifying imposition of provisional safeguard duties immediately in order to save the domestic producers from damage of market disruption which it would be difficult to repair, if the application of safeguard measure is delayed.

XVI Comments on views of Interested Parties:

101. The apprehensions raised by the interested parties in view of the initiation of instant safeguard investigation are dealt with in brief, for the sake of brevity.

- a. As regards the argument that increase in imports in September and October 2011 does not signify a trend and is an aberration, it is observed that the imports of the product under consideration have increased throughout the injury period in absolute terms with a sharp increase in imports in the most recent period. There is a sudden, sharp and significant increase in imports in the recent period. The Imports from China have increased phenomenally from 12971 MT in 2008-09 to 25,686 MT in Q2 of FY 2011-12 which shows a significant increase. The increase in imports analysis is not based on only two months data. Even 2011-12 as a whole also shows increased imports.
- b. As regards the argument that M/s PBCL and M/s Hi Tech are export centric companies, it is observed that both M/s PBCL and M/s Hi Tech are not an exports centric companies. In fact it was contended by the applicants that faced with significant increase in imports of the product from China, the petitioner companies are undertaking significant exports of the product to a number of countries. However, the opposing parties have not provided any substantial information to corroborate the above claim. It is also noted that the inventories with the domestic industry rose sharply and significantly, despite production cuts and decline in capacity utilization.
- c. As regards the argument that no price suppression /depression have been caused to the domestic industry, it is observed that due to presence of low priced imports, the landed price of imports were below the selling price of the domestic industry, thus leading to significant price undercutting. Further, the applicants were unable to increase their prices in tandem with increase in costs. Consequently the domestic industry suffered losses in the most recent period clearly establishing price suppression and depression effect.
- d. There have been submissions from interested parties, who have submitted against the desirability of imposition of both duties simultaneously. They have also submitted that imposition of both duties at the same time is not in the public interest. The issue has been analyzed. It is a fact that anti-dumping duty is also a trade remedy measure to counter and neutralize the ill effects of dumped imports through raising tariff barrier. Safeguard duty is a measure to protect the domestic industry from injurious effects of increased imports by raising tariff barrier. Both the duties have one function in common i.e. neutralizing injurious effects of imports, besides other functions. The domestic industry is legally justified for filing the present application. WTO laws also permits the same. No violation of either domestic or international law has been pointed out by the interested parties. It is also noted that the anti dumping duty was based on a different investigation period, whereas the present safeguard duty is being proposed based on much more recent period. Further, the domestic industry is suffering injury despite the existing anti dumping duty. It is however clarified that the safeguard duty being proposed shall take into account the anti dumping duty that is already in place. Therefore, there would not be dual protection against the same injury.
- e. As regards the applicability of competition law, the Authority notes that the levy or non-levy of safeguard duty or other duty being a legislative act pursuant to the exercise of powers under the Customs Tariff Act can also not be a subject-matter of judicial review by the Competition Commission. The two Acts substantially operate in different fields.

XVII Conclusion and Recommendation:

102. On the basis of the above preliminary findings it is seen that increased imports of Carbon Black from People's Republic of China have caused and threatened to cause market disruption to the domestic industry/ producers of Carbon Black. There exist critical circumstances where any delay in application for Specific Safeguard measures would cause

damage which it would be difficult to repair, necessitating immediate application of provisional Specific Safeguard duty for period of 200 days, pending final determination of market disruption and threat of market disruption. Considering the average cost of production of Carbon Black by the domestic producers (confidential), a reasonable return on capital employed, the present level of import duties and average import prices of Carbon Black, Specific Safeguard Duty at the rate of 30% ad valorem minus Anti-dumping duty payable on Carbon Black falling under Chapter heading 28030010 (for rubber applications) which is considered to be the minimum required to protect the interest of domestic industry, is recommended to be imposed on imports of such goods from Peoples Republic of China.

XVIII Further Process:

- The information provided by various parties may be subjected to verification where necessary, for which they will be informed separately.
- A public hearing will be held in due course before making a final determination, for which the date will be informed separately.

[F. No. D-22011/12/2011]

INDRANI DUTT MAJUMDER, Director General